[श्री हरि सिंह]

है तथा सेकुलर पावर्ज को बढ़ावा दे सकती है। विरोध पक्ष का जो स्वप्न है वह शीशे की तरह से टूट जाएगा। कांग्रेस पार्टी की सरकार में हिन्दुस्तान मजबूत देश बनेगा, आगे बढ़ेगा। जो निर्बल वर्ग के लोग हैं, जो कमजोर वर्ग के लोग हैं जिनके पास रहने को घर नहीं है, सिर छिपाने के लिए झोपड़ी नहीं है, जिनके पास रोजगार नहीं है, जिनके पास दवा-गोली नहीं है, वे सभी निर्बल वर्ग के लोग इस सरकार के अन्दर फलेंगे-फूलेंगे। इन शब्दों के साथ मैं राष्ट्रपति जी के प्रति धन्यवाद के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। धन्यवाद।

श्री मोर्जा ईर्शाद बेग (गुजरात) : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर माननीय सुकुल जी द्वारा प्रस्तावित आभार प्रस्ताव का मैं हार्दिक समर्थन करता हूं। मान्यवर देश के सामने पिछले वर्षों में जो भी श्री राजीव गांधी की सिद्धियां हैं, कांग्रेस सरकार की जो सिद्धियां हैं वह हमारे समक्ष हैं। मैं आपके माध्यम से देश के तमाम उन लोगों से और खास तौर से और खास कर के विपक्ष के जो नेता है उनसे मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि हकीकत की धरती पर आ कर देखें। अगर कोई सरकार चलती है, सरकार की नीतियां चलती हैं, सरकार के कार्यक्रम चलते हैं तो उन कार्यक्रमों से उसकी सिद्धियां क्या प्राप्त हुई, जनमानस को जो देश के एक कोने में बैठा हुआ एक इंसान है गरीब व्यक्ति हैं ऐसे व्यक्ति हैं जिनको कोई साधन नहीं मिल पाया है उन लोगों तक देश की सरकार द्वारा क्या पहुंच पाया है। क्या देश के जनमानस का सरकार के कार्यक्रमों द्वारा विकास हुआ है या वह आगे बढ़ पाया है या उसका जो रहन-सहन का स्तर है उसमें बढ़ावा हो पाया है। मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि विपक्ष आज है नहीं, बहाना कुछ और बनाते हैं लक्ष्य कुछ और है। वास्तव में जो लक्ष्य होना चाहिये वह तो है ही नहीं। नीति क्या है हमारी समझ में नहीं आता है। अभी सुब्रहमण्यम स्वामी जी कह रहे थे यह दल क्या है दलदल है जनता दल है क्या है यह तो समझना भी मुश्किल हो गया है। देश की जनता आज बड़ी भ्रांति में है। विरोध पक्ष का मतलब यह नहीं होता है। देश की संसद ने ऐसे विरोध पक्ष भी देखे। सरकार के जो कार्यक्रम है सिर्फ उनकी आलोचना करना ही विपक्षी दलों का कर्तव्य नहीं है लेकिन सरकार अगर अपने कार्यक्रमों से विचलित होती है तो वह देखे उसको आगे बढ़ाये। मान्यवर मैं अपना भाषण अभी समाप्त करता हूं और लंच के बाद फिर बोलूंगा।

THEI VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI]): Now, the House stands adjourned for lunch and will again meet at 2.30 P.M. Mr. Irshadbaig, you can continue your speech then.

The House then adjourned for lunch at thirty-one minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty-four minutes past two of the clock, the Vice-Chairman (Shri H. Hanumanthappa) in the Chair.

MOTION OF THANKS ON PRESIDENT'S ADDRESS—*Contd.*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI H. HANUMANTHAPPA): We shall continue with the discussion on the Motion of Thanks on the President's Address. Shri Irshadbaig Mirza.

श्री मोर्जा ईर्शाद बेग : उपसभाध्यक्ष महोदय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर सुकुल जी ने जो आभार प्रस्ताव रखा है उस के समर्थन में मैं बोल रहा था। मान्यवर विरोधी दल की अनुपस्थिति में मैं उन्हीं को कहने जा रहा था लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि आज सदन में विरोधी दल उपस्थित नहीं है क्योंकि देश में अगर भ्रमना किसी ने पैदा की है तो यह हमारे विपक्षी दलों ने की है। हकीकत कुछ है और यह देख नहीं सकते हैं और देख सकते हैं तो सच्चाई को वह कबूल नहीं कर रहे हैं इसलिये मान्यवर मैं कुछ जो सच्चाईयां हैं इकोनोमिक सर्वे के आधार पर और दूसरे आधार पर

यह बताने की चेष्टा कर रहा हूं कि देश की राजीव गांधी की सरकार ने कांग्रेस की सरकार ने किस प्रकार कुशलतापूर्वक अपना एडमिनिस्ट्रेशन विधिवत चलाया। मान्यवर राजीव गांधी की कांग्रेस सरकार के दृढ़ मनोबल तथा राजकीय कुशलता से 1988-89 में कृषि उत्पादन के क्षेत्र में अर्थ व्यवस्था का सुदृढ़ पुनरूस्थापन हुआ तथा औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि गति बनी रही तथा सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर में 9 प्रतिशत वृद्धि होने की संभावना स्थापित हैं। मान्यवर देश और समग्र विश्व इस बात का उसेपता है कि शतक के गंभीर सूखे की चपेट में पिछले दो वर्षों में समग्र भारत-वर्ष फंसा हुआ था। किन्तु इन्हीं दो वर्षों में भारतीय अर्थ व्यवस्था ने एक निश्चित बुनियादी क्षमता का परिचय दिया है। मान्यवर मुद्रा स्फीति की दर भी पिछले सूखे के वर्षों की तुलना में उल्लेखनीय रूप से कम रही है। मान्यवर यह सब लक्ष्य सिद्धियां नई नीतियों संबंधी परिवर्तन विकासोन्मुख प्रशासनकी प्रभावपूर्ण कार्य वाही की योग्यता तथा खाद्यान्न संबंधी अर्थ व्यवस्था के दूरदर्शितापूर्ण प्रबंध पर निर्भर है। मान्यवर औद्योगिक उत्पादन में 7.5 प्रतिशत की वृद्धि सकल राष्ट्रीय उत्पादन में 3.6 प्रतिशत की वास्तविक वृद्धि तथा मुद्रा स्फीति 10.6 प्रतिशत से घट करके अब जो 8 प्रतिशत रह गई है, मान्यवर, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि क्या यह कुशल सरकार का प्रमाण नहीं प्रदर्शित करती हैं? मान्यवर, मैं यह भी चाहूंगा आपके माध्यम से कि भंयकर सूखे के बावजूद कृषि अर्थ व्यवस्था को तमाम प्रयत्नों के अग्रिम उपायों से सजीव रखना और खाद्यान्न में 9 प्रतिशत की कमी की पूर्ति रबी फसल के खाद्यान्न उत्पादन में दो प्रतिशत की वृद्धि करके संतुलन बनाना यह सक्षम सरकार के अग्रिम प्रमाण देते हैं। मान्यवर, आगामी वर्ष में कृषि उत्पादन में 17 से 20 प्रतिशत की वृद्धि होगी और खाद्यान्नों का उत्पादन 1,660 लाख मैट्रिक टन से अधिक 1700 लाख टन होना यह संभावी है। मान्यवर, आर्थिक वृद्धि दर को आगामी आयोजना में 6 से अधिक प्रतिशत पर रखा गया है, जो चेतनशील सरकार ही कर सकती है। मान्यवर, इस सरकार ने निर्यात में वृद्धि की औद्योगिक वृद्धि लघु उद्योग क्षेत्र में तथा आधारभूत उद्योग क्षेत्र में प्रभावशाली वृद्धि के अतिरिक्त औद्योगिक संबंधों का स्थिर रहना यह सच्ची दिशा के सही कदम पर ही निर्भर करता है और जिसका एक वास्तविक प्रमाण यह सरकार ने दिया है। उसके पश्चात आंकड़ों से भी इस सच्चाई से अगर इस देश के विपक्ष को यह बताने की कोशिश कर रहे हैं तब भी इसकी स्वीकृति इनको नहीं हो रही है। देश के लोगों पर उनको कितना विश्वास है यह इस देश की जनता जानती है। और यह विश्वास उनको नहीं था इसकी वजह से देश की जनता ने भी उन पर विश्वास स्थापित नहीं किया, किन्तु मान्यवर, हमेशा उनकी जो नजर है विदेशों पर रहती है और विदेशों में भी सी.आई.ए. जैसी संस्थाओं से उनका ज्यादा तालमेल बंधा रहता है और उनकी बात को सच्चाई समझते हैं। इसलिये मैं किसी भारत के अर्थशास्त्री के आंकड़ों को यहां पर प्रस्तुत करूं इससे मैं इस सच्चाई को जो सच्चाई साबित कर सकते हैं इस लिये मैं आपके माध्यम से एक-दो उदाहरण यह देना चाहता हूं कि देश के लोग ही नहीं लेकिन विदेश की जो आर्थिक संस्थायें हैं और उनकी जो मानी हुई संस्था वर्ल्ड बैंक है उसके लोगों ने आ करके भारत के बारे में क्या कहा, सरकार की प्रगति के बारे में क्या कहा है, मैं मान्यवर, आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं। मान्यवर वर्ल्ड बैंक के वायस प्रसीडेंट फोर एशिया मिस्टर एटिला कारा उस्मान ओगलो जो भारत में अपनी टीम लेकर आये थे समग्र देश का उन्होंने दौरा किया और दौरा करने के पश्चात् उन्होंने जो कहा, वह मैं आपके माध्यम से देश के लोगों के सम्मुख और खासतौर से विरोधी दलों के सम्मुख रखना चाहता हूं।

मान्यवर, मैं यहां पर इसे उद्धृत करना हूं :

Mr. Kara Osmon Oglo has visited India in 1961 and again in late 70s, and he has said that India of today is definitely not the India of early 60s or late 70s. There is a noticeable degree of grwoth taking

place. Then again, it has been said that India is still a low income country and has a long way to go, but the whole region is growing very fast and trade possibilities are increasing significantly. The bank officials said India has shown a reasonable reliance on demestic savings and had a very capable bureaucracy and a very vital democratic way oflife. In fact, India had the making of great potential growth.

Further it is said, Mr. Kara Osraon Oglo maintained that it was wrong to infer a connection between import liberalisation and any pressure on the balance of payments. Healthy economic growth is bound to create a sizeable import demand. Success and export growth had to be combined with the availability of inputs of material used in the exports particularly those having a bearing on impioved competitiveness.

Further it is said, Mr. Kara Osmon Oglo was encouraged by the fact that revised estimate of 1987 rate of growth in India had turned out to be better than previous figures. It was found that against the earlier estimates of 1.6 per cent to 2.2 per cent, the actual growth rate was 3.4 per cent and that too despite 1987 being a drought year. The high figures were manifest of the resilience of the Indian economy in all spheres, industry, agriculture and services. The current year's growth estimates are between 9 per cent and 10 per cent the highest rate ever achieved in India. One cannot assume that the 10 per cent growth rate will continue but officials felt confident that the 6.5 per cent growth rate targetted by the Planning Commission was not over-optimistic and in fact was quite feasible.

मान्यवर, यह निष्कर्ष है विदेश के लोगों का और उनके अर्थशास्त्रियों का, उनको बैंकिंग सिस्टम के जो एक्सपर्ट हैं, उनका। लेकिन हकीकत कुछ भी हो, देश का विपक्ष आज हकीकतों से मुकर रहा है। देश के लोगों को जब उन पर कांफीडेंस नहीं रहा, देश के लोगों का विश्वास नहीं रहा तो यह गलत तरीके अपना कर एक डेमोक्रेटिक ढंग से, प्रजातांत्रिक ढंग से चुनी हुई सरकार को डिस्टेबिल करने के लिए कई एक नए शगूफे रोजाना इस्टेब्लिश करते हैं। मान्यवर, एक समय यह था कि ग्रांड एलाइन्स के नाम पर कांग्रेस को, इंदिरा गांधी जी को चुनी हुई सरकार को उन्होंने परास्त करना चाहा था, लेकिन देश की जनता सक्षम है, वह पहचान सकती है।

मान्यवर, आज जो बातें मैं प्रस्तुत करने जा रहा हूं, वह यह है कि पहले विपक्ष अपने आप में अपना मुख देखकर बताए कि वह कहां पर बैठते हैं, कितने यूनाइट हैं, उनकी दलीलें क्या हैं, देश के लोगों को किस तरह से फायदा पहुंचाना चाहते हैं? अपने आप में ही वह अभी खुले नहीं हैं। दल कहीं बात कर रहा है, दल दल कहीं फंस रहा है, कौन कहां जा रहा है, इनका हमें पता नहीं लगता। पिछले वर्षों में हमने देखा है कि देश का जो मीडिया है, उसमें कई लोग हमारी बात को समझ सकते हैं, हैं, सच्चाई को समझ सकते हैं। कुछ लोगों ने हमारे खिलाफ बात की है, लेकिन हकीकतों को कभी छुपाया नहीं जा सकता गलत तार्किक दलीलें देकर। कभी-कभी ऐसे जर्नलिस्ट, कभी कभी मीडिया के ऐसे रिप्रजेण्टेटिव भी सच्चाई को उजागर करते हैं।

मान्यवर, यह लोग अपने आप में कह रहे हैं कि हम सब एक हो गए हैं, यूनाइट हो गए हैं, लेकिन नेगेटिव एप्रोच से एक हुए हैं। यह ये लोग कह रहे हैं, मैं नहीं कह रहा हूं। मैं वह सच्चाइयां उजागर करना चाहता हूं जो विरोधी दल के लोग अपने लोगों के बारे में कह रहे हैं।

मान्यवर, वे यहीं के सदस्य थे। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि वह हमारे

भी साथी थे। अब छोड़ गए हैं। अच्छा हुआ, ऐसे लोग इस पार्टी से जल्दी चले गए। वह क्या हैं, कैसे हैं, हमने तो सच्चे तरीके से या गलत तरीके से उनको यहां रखा था। वह गए, अच्छा हुआ। अब वे जिन लोगों के साथ बैठते हैं, उन्होंने पहचाना है। वह क्या कह रहे हैं, यह मैं कहना चाहता हूं। यहां अलग-अलग विरोधी दल हैं। अब उनकी एक दूसरे के प्रति क्या आस्था है, मैं यह भी उजागर करने की कोशिश कर रहा हूं। मान्यवर, वह किस-किस के साथ जाकर बैठते हैं। पांच मिनिट पहले जो दुश्मन थे, जिनको गाली देते थे, जिनके साथ नीतियों का कोई सम्बंध नहीं है, उनके साथ बैठते हैं। नीतियों की बात करते हैं, सच्चाई की बात करते हैं और मान्यवर, बड़े खेद की बात है कि भ्रष्टाचार की भी बात करते हैं जोकि खुद भ्रष्टाचार की दलदल में फंसे हुए हैं। यह मैं नहीं कह रहा हूं। इनके साथ बैठे हुए लोग यह कह रहे हैं। यह एक सामयिक अखबार वालों ने लिखा है, मैंने नहीं लिखा है। वह यह कहता है कि सितम्बर, 86 में जब चौधरी चरणसिंह अर्ध-विक्षिप्तावस्था में मृत्यु के निकट थे, राजा साहब के इशारे पर, राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह के इशारे पर संजय सिंह ने वयोवृद्ध चौधरी चरणसिंह को विधानसभा में चरणसिंह चोर कहकर पुकारा। किन्तु किसी को तब भी यह आभास नहीं था कि राजा साहब अपनी राजनीति के लिए हर्षमैन सरीखे अमरीकी एजेंटों के मित्र भी बन सकते हैं। आज वही संजय सिंह उनके साथ हैं और उन्हीं के साथ हैं जिनको चोर कहा था उनके पुत्र भी आज उनके साथ बैठे हुए हैं अब देखिए कि उनके बीच में कितना अंतर है वाणी में और व्यवहार में कितना अंतर हैं। मान्यवर, आगे सुनिए, चंद्रशेखर जी को अभी भी पूरी तरह विश्वास नहीं था। यह सामयिक कहता है कि, राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह ने वित्त मंत्री की हैसियत से गैर जिम्मेदारी का इतना बड़ा काम किया था। लेकिन उनके टाल-मटोल वाले उत्तर से उनका शक बढ़ गया। तभी उनके एक मित्र ने आकर दावा किया कि वह उन्हें हर्षमैन की चिट्ठी आदि दिखा सकता है। किन्तु वित्त मंत्रालय की फाइलों में से वह चिट्ठी गायब है जो या तो स्वयं वित्त मंत्री ने लिखी थी या वित्त मंत्री के निर्देश पर भूरेलाल ने। वैसे इस अधिकारी का दावा था कि विरोधी दलों के कतिपय नेताओं की जांच के लिए हर्षमैन को पत्र भूरेलाल ने लिखा था न कि तात्कालिक वित्त मंत्री ने। इन्हीं दिनों चन्द्रशेखर अपने एक बुजुर्ग मित्र को देखने यूरोप जाने वाले थे जोकि वहां बीमार थे। जब वे भारत से जा रहे थे, उनके मित्रों ने उनसे यह कहा था कि जब हर्षमैन आपको खुद मिलकर वस्तुस्थिति से अवगत कराएगा तभी आप यकीन करेंगे। चन्द्रशेखर जी यूरोप गए एक रात उनकी हर्षमैन से मुलाकात भी हुई। जब चन्द्रशेखर का हर्षमैन से परिचय कराया गया तो उसने कहा कि, हां मैं आपके बारे में सब कुछ जानता हूं और आपके यहां के एक बड़े आदमी ने आपके बारे में कुछ जानकारियां चाही थीं। चन्द्रशेखर के बार-बार कहने पर भी हर्षमैन ने नाम नहीं बताया और राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह के नाम पर अजीब-सा इंकार किया। चन्द्रशेखर के साथ गए उस सम्पर्क के अनुसार हर्षमैन का इकार तकनीकी आधार पर था। यह उसकी टालमटोल वाली मुद्रा से स्पष्ट था इस मुलाकात के बाद चन्द्रशेखर वापिस आ गए। तो यह स्पष्ट हो चुका था कि जब विश्वनाथ प्रताप सिंह भारत के वित्त मंत्री थे तब वित्त मंत्रालय की तरफ से किसी व्यक्ति ने अनेकों राजनीतिज्ञों, व्यवसाइयों और सैनिक अधिकारियों की जांच कराने का आग्रह किया था और जांच के लिए हर्षमैन को आवश्यक सूचनाएं और दस्तावेज उपलब्ध कराए गए थे। चाहे ये सूचनाएं भारत की सुरक्षा एवं राजनीति के लिए कितनी ही गोपनीय क्यों न रही हों। जांच वाले नामों में एक नाम चन्द्रशेखर का भी था, इसकी पुष्टि भी हो गई है।"

मान्यवर, आगे मैं पढ़ता हूं "इसी बीच विश्वनाथ प्रताप सिंह ने इस आरोप का खण्डन कर दिया कि उन्होंने भारतीय

[श्री मीर्जा ईर्शादबेग]

नेताओं की फेयरफैक्स से जांच कराई थी किन्तु सबसे बड़ा धमाका हर्षमैन ने किया है। उन्होंने 7 फरवरी की रात को डाक्टर स्वामी को बताया कि यह सच है कि उन्होंने भारत के विरोधी दलों के अनेक नेताओं की जांच की थी, किन्त उन्होंने यह भी कहा कि उनको यह काम तत्कालीन वित्त मंत्री राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह ने नहीं सौपा था। इस मुलाकात के बाद डाक्टर स्वामी ने कहा कि अब मैं जान गया हूं कि फेयरफैक्स से यह काम भारत के कुछ लोगों और कुछ अधिकारियों ने कराया था।" मान्यवर, इस लिस्ट में और 16 लोगों के नाम कहीं पर नहीं हैं। मान्यवर, "लेकिन हर्षमैन की स्वीकारोक्ति से यह स्पष्ट है कि फेयरफैक्स ने भारतीय नेताओं की जांच की थी और यह फेयरफैक्स वही जासूसी कम्पनी है जिससे राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह ने वित्त मंत्री की हैसियत से भूरेलाल, विनोद पाण्डे और एक भारतीय उद्योगपति के माध्यम से सम्पर्क साधा था। जिस समय के अपने सम्पर्क को राजा साहब उचित ठहरा चुके हैं, तभी की यह घटना भी है। क्या राजा साहब अपने दिल को टटोलकर बताएंगे कि चन्द्रशेखर, कर्पूरी ठाकुर, बहुगुणा आदि की जांच उन्होंने अपने वफादार नौकरशाहों के माध्यम से नहीं कराई थी? यानि भूरेलाल और विनोद पाण्डे के माध्यम से। चूंकि उन्होंने दस्तखत न करके मौखिक आदेश दिए थे, क्या वे सिर्फ इसी आधार पर झूठ बोलते रहेंगे? अगर राजा साहब और उनके कुछ धनपशु मित्र इतने ही साफ-पाक हैं तो दिल्ली और बम्बई से हर्षमैन को इस आशय के फोन क्यों किए गए कि वे डाक्टर स्वामी से मुलाकात न करें। ये लोग कौन थे? इनकी रुचि किसके हितों में है?"

उपसभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा) : क्यूटेशन सीमित रखिए सारा पढ़ने की क्या जरूरत है?

श्री मीर्जा ईर्शादबग : मान्यवर, यह उजागर कर दूं तो ज्यादा समझ में आ जाएगा... **(व्यवधान)**...

उप सभाध्यक्ष (श्री हेच० हनुमनतप्पा) : नहीं, पब्लिश्ड हो गया है। ... **(व्यवधान)**...

श्री मीर्जा इर्शादबेग : मान्यवर, मैं यह इसलिए कहना चाहता हूं कि राजा साहब ने जो-जो हथकण्डे इसके साथ किए। अब ये सब लोग इसलिए जमा हो रहे हैं कि किसी भी बहाने देश की सत्ता को हथिया लिया जाए। मान्यवर, आगे एक बात और बताना चाहता हूं। कितने दिन में बदल जाते हैं ये लोग। देश की जनता विश्वास कैसे करे और हम भी उन पर विश्वास कैसे करें।

"फरवरी के पहले हफ्ते में रोहतक की एक जनसभा में हरियाणा के मुख्य मंत्री देवीलाल की यह अपील न तो आकस्मिक थी और न बिना कुछ सोचे-विचारे दिए जाने वाले उन वक्तव्यों में से एक जो विपक्ष के इस नए डॉन की विशेषता बन गई है और ये वही देवीलाल हैं जिन्हें अभी हाल तक देश के अगले प्रधान मंत्री के बारे में कोई दुविधा नहीं थी। वे घूम-घूमकर चारों तरफ यह घोषणा करते फिर रहे थे कि विपक्ष में नेतृत्व को ले कर कोई विवाद नहीं है। यह तय हो चुका है कि विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रधान मंत्री होंगे। यह घोषणा कई महीने तक वह दोहराते रहे, फिर अचानक उनका सुर बदला और वे कहने लगे कि जनता दल के निर्वाचित प्रतिनिधि ही यह तय करेंगे कि प्रधान मंत्री के पद पर किसे बैठाया जाए। फिर वे यह फरमाने लगे कि देश का अगला प्रधान मंत्री किसान का बेटा होगा। रोहतक की अपील इस प्रक्रिया

का एक स्वाभाविक उत्कर्ष थी, साफ है कि भावी प्रधानमंत्रित्व की दौड़ में अब एक और आदमी शामिल हो गया है।"

मान्यवर, और साथ में बैठकर के यह बात करते हैं, एक दल में बैठकर के यह बात करते हैं। पहले कहते हैं ये प्रधान मंत्री, दूसरे कहते हैं ये प्रधान मंत्री, तीसरे कहते हैं तीसरे प्रधान मंत्री। लेकिन मान्यवर, मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं और यह अखबार ने लिखा है "हाल ही में उत्तर प्रदेश में हुए ब्लाक प्रमुख, सहकारिता बैंक, जिला परिषद और नगरपालिका चेयरमैन के चुनावों में जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष वी०पी० सिंह अपने निर्वाचन क्षेत्र में इन चारों चुनावों में बहुत बुरी तरह से परास्त हुए हैं। उनका एक भी आदमी इन चुनावों में नहीं जीत पाया। इसी तरह जनता दल के अन्य राष्ट्रीय नेता अरूण नेहरू, अजीत सिंह, चन्द्रशेखर, जनमोर्चा संयोजक रामधन आदि सभी अपने चुनाव क्षेत्रों में बहुत ही बुरी तरह हारे।" और विकल्प बनता है राजीव गांधी का? उनका विकल्प बनना है, देश की कांग्रेस सरकार का विकल्प बनना है तो पहले देश के लिए कुछ करने की भावना पैदा कीजिए।

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से एक बात और कहना चाहूंगा यहां पर। यश तो देवीलाल जी के बारे में और विश्वनाथ प्रताप सिंह जी के बारे था। लेकिन आपसे यह कहना चाहता हूं कि अ... जो कई लोग हैं जिनको निष्कासित कर दिया गया अपने राज्य में से, मुख्य मंत्री के पदों से, उनके बारे में डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी कहते हैं:

> यह एक दिलचस्प बात है कि कर्नाटक में रामकृष्ण हेगड़े के नजदीकी रिश्तेदारों द्वारा किए गए तमाम सौदों के लिए पैसा हमेशा विदेश से आया है, दुबई से आया।

> पिछले साल अगस्त में तत्कालीन हेगड़े सरकार द्वारा शरीफ लोगों का टेलीफोन टैप करने के बारे में इलस्ट्रेड वीकली ऑफ इंडिया को दिए अपने इंटरव्यू में मैंने कहा था श्री हेगड़े को मेरा एहसानमंद होना चाहिए कि मैं उनके बारे में और भी जो कुछ जानता हूं, उसका मैंने सार्वजनिक उद्घाटन नहीं किया है। तब से श्री हेगड़े बहादुरी के जोश में प्रेस कांफ्रेंसों के जरिए चुनौती देते रहे हैं कि मैं जो कुछ जानता हूं उसे सार्वजनिक कर दूं। मेरे मौन को उन्होंने अपनी निरपराधिता का प्रमाण मान रखा है। इसके अलावा चूंकि वे अब भी अपनी मूल्य आधारित राजनीति की चर्चा से लोगों को बेवकूफ बनाते जा रहे हैं, मेरे पास इसके अलावा कोई और चारा नहीं है कि मैं किस्तों में वह उद्घाटित करता रहूं जो लोगों को उनके बारे में तथा उनकी मूल्य आधारित राजनीति के बारे में जानना ही चाहिए। महोदय, मैं नहीं जानता कि यह मूल्य आधारित राजनीति क्या है, मूल्य आधारित है या अमूल्य आधारित राजनीति है।

> एक समय श्री हेगड़े ने कहा था कि यदि मैं यह साबित कर दूं कि उन्होंने 51 शरीफ आदमियों के टेलीफोन टैप करने का आदेश दिया था तो वे राजनीति से सन्यास ले लेंगे। यह मैं कायल कर देने की हद तक और दस्तावेजों के बल पर साबित कर चुका हूं, लेकिन श्री हेगड़े ने अपनी उपर्युक्त प्रतिज्ञा फटाफट भुला दी। यह रहस्योद्घाटन भी उनकी धृष्टता को बनाए ही रखेगा। फिर भी लोगों को तो तथ्यों की जानकारी होनी ही चाहिए।

मान्यवर, जमीन घोटाले जो हुए, आप जिस स्टेट से आते हैं उसके बारे में आप मुझसे ज्यादा जानते हैं। वहां जो जमीन के घोटाले हुए उनमें हेगड़े के पारवारिक सदस्यों का हाथ था। उसके बारे में डॉ० सुब्रह्मण्यम स्वामी

[श्री मिर्जा ईर्शाद बेग]

ने जो कुछ कहा है, वह मैं देश को बतलाना चाहता हूं।...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIH. HANUMANTHAPPA): You limit ourself only to quotation. Don't mention about a person who is not present in the House. *(Interruptions)* Yes, that is why I have allowed only quotation.

श्री मीर्जा ईर्शादबेग : यह मैं इसलिए कह रहा हूं कि बाहर देश के लोग, देश का मीडिया क्या कहता है वह, इन्हीं की जुबान में कहना चाहता था क्योंकि देश के लोगों में जो भ्रम किया जा रहा है। उनको भ्रमित किया जा रहा है, उनको यह बताने की कोशिश मैं कर रहा हूं कि यहां जो कुछ बोला जा रहा है वह कांग्रेस के मैम्बर नहीं बोल रहे हैं, ये राजीव गांधी से जुड़े हुए लोग नहीं बोल रहे थे, लेकिन जनता की आवाज क्या है, हकीकत की आवाज क्या है, देश की जनता यह जाने। हेगड़े जी ने यह कहा है:

लेकिन इस बार हमने चुनाव से पूर्व ही अपना नेता चुन लिया और वह भी सर्वानुमति से। इसलिए वह झगड़ा इस बार नहीं होगा।

मान्यवर, इसमें आगे कहा गया है:

चन्द्रशेखर जी ने ही बी०पी० सिंह के नाम का अनुमोदन किया। चंद्रशेखर जी बिना किसी संदेह के नेता हैं। शुरू में उनके विकल्प बनने की बात चली थी, लेकिन परिस्थितियां ऐसी पलटीं कि उनकी छवि घटती चली गई। हमारी छवि घटती चली गई।

मान्यवर, ये राजीव गांधी के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हैं। भ्रष्टाचार किसने किया, देश की जनता को यह पता लगाना चाहिए। इसीलिए मैं कहना चाहता हूं कि हेगड़े जी ने कहा कि— अब किसी ईमानदार व्यक्ति के बारे में भी कोई भ्रष्टाचार के आरोप लगाए तो लोग समझेंगे कि वह भ्रष्ट ही है। अतः मैंने वी०पी० सिंह से कहा, आपके इस अभियान से मैं पहला कार्यकर्ता बनूंगा, मैंने दिल से यह बात कही थी।

मान्यवर, इनके लोगों के बारे में मैं और कहना चाहता था लेकिन चूंकि समय की पाबंदी है, इसलिए मुझे थोड़ा और समय देने की कृपा करें।

मान्यवर, इनके नेता हैं जार्ज फरनांडिस। उनके बारे में डा० सुब्रहमण्यम स्वामी का कहना है:

जार्ज का विरोध मैंने इसलिए किया क्योंकि जब वे मंत्री थे, जब उन्होंने लीबिया को हमारे आणविक शक्ति के रहस्य बेचने की कोशिश की थी। उसको मैंने रोका और जार्ज लीबिया से जो गुप्त समझौता करके आए थे उसे तत्कालीन प्रधान मंत्री मोरारजी भाई से रद्द करवया। उससे मुझे यह लगा कि यह व्यक्ति न तो भारत के हित को समझता है और न ही मानवता के हित को समझता है। वह पैसे के लिए कुछ भी कर सकता है। उसकी पुष्टि मुझे तब हुई जब यह पाकिस्तान गये और जिया से मिलकर आये। पर अब मैं उनका विरोध नहीं करता हूं क्योंकि जब वह किसी भी गिनती में नहीं है। अब उनके पास कोई गलत काम करने का मौका नहीं है।" देश को बेचने वाली बात कौन कर रहा है? देश को विदेशी ताकतों के हाथ में बेचने की बात यही लोग कर रहे हैं। यही लोग आज यह बात कह रहे हैं कि देश का नेतृत्व हम लोग करेंगे। देश की जनता इसका फैसला करेगी। हेगड़े का फासिस्ट तरीका है कि झूठ को हजार बार बोलो तो सच हो जायेगा। मैं इस लिए कह रहा हूं कि इनके साथ बैठने वाले जो लोग

3.00 P.M.

हैं वे किस प्रकार की बातें करते हैं। इन बातों से यह साबित हो जाता है कि देश को राजनीति करने के लिए न तो लोग सक्षम हैं और न इनके पास कुछ और है। आज उन्होंने यह हंगामा उठा कर रखा है। (**समय की घंटी**) पांच मिनट में मैं अपनी बात खत्म कर दूंगा।

मैं इस लिए कह रहा हूं कि देश का विपक्ष हम से इस बात को कह रहा है। हम चाहते हैं देश का विपक्ष हमारे साथ बैठे। देश की राजनीति हमारे साथ में रहे और देश के विकास की एक मंजिल जो हमारे राजीव गांधी जी की कांग्रेस सरकार करने जा रही है उस पर हमारा सहयोग करे लेकिन सिर्फ एक गलत तरीके पर नैगेटिव अप्रोच लेकर, देश की सरकार जो इतना अच्छा काम कर रही है, उस सरकार का विरोध करना मैं मानता हूं सच बात नहीं है।

एक और पार्टी है बी०जे०पी०। उन्होंने तो यह बात कह दी कि विकल्प हो गया कांग्रेस का लेकिन आडवाणी जी ने यह कहा कि "विकल्प पैदा हो गया है ऐसा मैं नहीं मानता हूं। ऐसा लगता है कि आज चुनाव हो जाये, तो कांग्रेस हारेगी। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि लोगों की औरों के प्रति आस्था पैदा हो गयी है। लेकिन नकारात्मक वोट के आधार पर कांग्रेस हार जायेगी। फिर भी कोई विश्वासपूर्वक नहीं कह सकता है कि उसके बाद किस प्रकार की स्थिर व्यवस्था बनेगी।" यह अपने आप में कितना साफ है। अपने आप में इनको भरोसा नहीं है। इनको भरोसा नहीं है कि देश में से कांग्रेस की सरकार हट सकती है या नहीं। देश में से राजीव की सरकार जा सकती है या नहीं।

आगे कुछ नहीं कहना चाहता। सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि बी.पी. सिंह ने जो बात बतायी थी वह कह रहा हूं। आडवाणी जी जो बी.जी.पी. के हैं वह कह रहे हैं" जैसा संबंध जयप्रकाश नारायण का भारतीय जनसंघ के साथ था, जिसमें विश्वास था, परस्पर आदर था, वैसा सम्बन्ध अभी तक उनसे (बी.पी. सिंह) नहीं बन पाया, यह धारणा हमारी पार्टी में रही है और इस धारणा से मैंने व्यक्तिगत रूप से उन्हें अवगत भी कराया है। यह धारणा ही संबंध के विकास में बाधक रही। एक बात और भी है. जिस दिन उन्होंने यह बयान दिया कि कम्यूनिस्टों को मैं स्वाभाविक साथी मानता हूं, तभी से हमने उन्हें सचेत किया आज पश्चिम बंगाल में मार्क्सवादी पार्टी अगर इतनी सबल बनी है तो उसका प्रमुख कारण यह था कि 1967 में अजय मुखर्जी ने उनको अपना स्वाभाविक साथी माना था। स्वाभाविक साथी मान कर, उन्हें मुख्यमंत्री बना कर और कुछ ही महीनों में उनका पत्ता साफ कर के माकपा ने सत्ता हथिया ली और तब से वहां हावी है। इसके लिए बी. पी. सिंह द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर ही सावधानी आवश्यक नहीं है, बल्कि देश के हितों के लिए भी (सावधानी) जरूरी है।" यह आडवाणी जी ने कहा।

अंत में एक बात कह कर अपनी बात खत्म करूंगा कि किसी भी विदेशी ताकतों के साथ में हमारी किसी बात को कहा जाए, हमारी किसी ऐसी गुप्त व्यवस्थाओं को उनको न बताया जाए जिससे देश की स्वतंत्रता को खतरा पड़ सकता है उसके बारे में सी० आई० ए० का उल्लेख किया गया है। उसमें एक बात कहना चाहूंगा कि अखबार के जर्नलिस्ट्स ने यह कहा है "भारत में सी० आई० ए० का खेल कोई नया नहीं है। पचास और साठ के दशक से ही सी० आई० ए० भारत में कुछ अखबारों और संपादकों के माध्यम से आपरेट करता रहा है। यह लॉबी हर उस महत्वपूर्ण नाम पर कालिख पोतने का काम करती रही है, जिसे अमेरिकी हितों के अनुरूप सही पाया गया। वी० के० कृष्णा मेनन संभवत : इस लॉबी के पहले शिकार थे। कुमार मंगलम (अब स्वर्गीय) भी

[श्री मोर्जा ईर्शाद बेग]

इनकी आंखों को किरकिरी कर रहे थे। हर्शमैन आदि भारत में सी० आई० ए० के पुराने खेल का वर्तमान विस्तार मात्र है।

इस संदर्भ में यही बात ध्यान देने योग्य है कि भारत में हर्शमैन के दोस्तों का निशाना सिर्फ राजीव गांधी की कांग्रेस ही नहीं है इनको "हिट लिस्ट" में सबसे ऊपर चंद्रशेखर का नाम है। आज जो लोग हर्शमैन को मिली भारतीय राजनीतिज्ञों और कुछ वरिष्ठ अधिकारियों को ब्लैकमेल कर सकने की ताकत पर चिंतित हैं, उन्हें कानूनी दांव-पेंच में न पड़कर इस मामले पर खुली बहस चलानी चाहिए। इस बहस के दौरान प्रत्येक संबंधित नाम पर चर्चा हो और इसका फैसला जनता पर छोड़ना चाहिए क्योंकि यह बात आम आदमी को बताना बहुत जरूरी है कि भारत की सुरक्षा के साथ किस-किस ने खिलवाड़ किया है।

महोदय, अंत में मैं आखिरी बात यह उद्धृत करना चाहता हूं कि बी०जे० पी० के नेता और उनके महामंत्री ने अपना जो निवेदन दिया है उसमें वे कहते हैं कि यह जो दलदल बना है उसके बारे में यह पता नहीं चलता है कि उस दलदल की नीतियां क्या हैं, वह दलदल किस प्रकार से देश को आगे ले जाना चाहता है। मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि आज भी कांग्रेस ही एक ऐसा सक्षम पक्ष हैं, कांग्रेस पार्टी ही ऐसी पार्टी है जो देश के तमाम धर्मों को, देश के तमाम वर्गों को, देश को तमाम कमजोर ताकतों को अपने साथ लेकर आगे बढ़ा सकती है। बी०जे०पी० एक संकुचित मनोवृत्ति को लेकर चल रहा है, भ्रष्ट व्यक्तियों को लेकर दलबदल चल रहा है और जो क्षेत्रीय पार्टियां बनी हैं वे सब निहित स्वार्थों के लिए बनी हैं, ये सब देश की अस्मिता को बेचने जा रहे हैं, देश की सुरक्षा को बेचने जा रहे हैं। देश की जनता कभी भी इनको माफ नहीं करेगी।

अंत में श्री राजीव गांधी जी के बारे में एक बात कह कर मैं बैठ जाता हूं। श्री राजीव गांधी एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन पर गीता का एक श्लोक काफी ठीक बैठता है। श्री राजीव गांधी देश की जनता के लिए क्या करना चाहते हैं, श्री राजीव गांधी अपने दिल में क्या विचार रखते हैं, कांग्रेस के नेता देश की जनता के लिए क्या करना चाहते हैं देश को आगे ले जाने के लिए क्या करना चाहते हैं, मैं उस संबंध में गीता का एक श्लोक यहां पर कहना चाहता हूं जो पर्याप्त है –

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्,
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्

मान्यवर, इसी कामना से हमारे लीडर आगे बढ़ रहे हैं। देश में गलत ताकतों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए वे आगे बढ़ रहे हैं। मुझे पूर्ण आशा और विश्वास है कि देश की जनता उनके साथ रहेगी, देश की जनता राजीव गांधी का साथ देगी ताकि देश में साम्प्रदायिक और कम्यूनल फोर्सेज हैं उनके खिलाफ आवाज उठाई जा सके। अंत में मैं आपको धन्यवाद देता हूं जो आपने मुझे समय से अधिक बोलने का मौका दिया।

श्रीमती कैलाशपति (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष महोदय, राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव जो श्री पी० एन० सुकुल द्वारा प्रस्तुत किया गया है, मैं उसका समर्थन करती हूं। राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण में शांति की बात पर जोर दिया गया है। लेकिन हमारे राज्यों में पंजाब, त्रिपुरा में और झारखण्ड आन्दोलन बिहार में काफी समय से चल रहे हैं। अभी हाल ही में बोडो आन्दोलन भी शुरू

हो गया है। एक के बाद एक न जाने कितने मूवमेंट इस देश में चल रहे हैं। बोडो मूवमेंट में आज तक न जाने कितने लोग मारे जा चुके हैं। हमारी सरकार को चाहिये कि वह इंटरवीन करके इस समस्या का हल निकाले। आज जमशेदपुर, छोटानागपुर, मिदनापुर, पुरुलिया आदि स्थानों पर झारखंड मूवमेंट जोर पकड़ता जा रहा है। गवर्नमेंट को इसके सोल्यूशन पर भी ध्यान देना चाहिये और आन्दोलन को खत्म करना चाहिये।

हमारे देश में बेरोजगारी की समस्या सबसे बड़ी प्रोब्लम है। आज हमारे देश में एजूकेटिड अनइम्प्लाइड यूथ की संख्या लगभग दो करोड़ है। अनएजूकेटिड अन-इम्प्लायड यूथ की संख्या इससे ज्यादा होगी। इसलिये जल्दी से जल्दी बेरोजगारी दूर करने के लिये सरकार को कदम उठाने चाहिये। इसमें कोई संदेह नहीं है कि 20-सूत्री कार्यक्रम के कारण देश में काफी गरीबों की आर्थिक स्थिति सुधरी है। बहुत से ऐसे राज्य हैं जहां पर उन जरूरतमन्द लोगों को सहायता नहीं मिल पाती है। जिनको सहायता मिलनी चाहिये जो पैसा गरीबों की भलाई के लिये खर्च होना चाहिये, वह सही मायनों में गरीबों तक खर्च नहीं हो पाता है।

एन० आर० ई० पी० और आर० एल० ई० जी० पी० को मिलाने का प्रस्ताव है किन्तु जब तक इन कार्यक्रमों के लिये पर्याप्त धन की व्यवस्था नहीं की जाती तब तक कुछ नहीं हो सकता। माननीय प्रधान मंत्री ने स्वयं कहा है कि गरीबों के लिए रखी गयी राशि का 80 प्रतिशत बिचौलियों को और कर्मचारियों को वेतन देने में चला जाता है। जहां तक गरीबी की रेखा के नीचे के लोगों की स्थिति सुधारने का संबंध है। इस संबंध में हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि यदि अभ्यार्थी एक समान योग्यता रखता है तो नौकरी उस अभ्यार्थी को दी जानी चाहिए जिसके परिवार में कोई भी व्यक्ति रोजगार में नही है। सिर्फ कानून बना देने से बूथ केप्चरिंग होना बन्द नहीं होगा। आप ऐसी व्यवस्था करें कि चुनावों के दौरान जिन राज्यों में बूथ केप्चरिंग का खतरा होता है उन राज्यों में दूसरे राज्यों की पुलिस भेजी जाय और दूसरे राज्यों से ही पोलिंग आफिसर या प्रिसाइडिंग आफिसर भेजे जांय तभी वहां निष्पक्ष चुनाव होना संभव है।

गरीबी निवारण के कार्यक्रम कार्यान्वित किये जाने चाहिए। लेकिन इन कार्यक्रमों के कार्यान्वियन के रास्ते में भारतीय सिविल सेवा बाधक है। यद्यपि हमारी भारतीय प्रशासनिक सेवायें तथा अन्य सेवायें विश्व में बड़ी कुशल मानी जाती हैं किन्तु कभी कभी उनका दृष्टिकोण नकारात्मक हो जाता है। उनको चाहिए कि वे गरीब लोगों की विकास संबंधी योजनाओं के संबंध में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनायें।

पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने कहा था कि यदि ग्रामीण गरीब लोगों को शक्तिशाली बनाना है तो हमें सहकारी समितियों को मजबूत करना होगा तथा पंचायती राज शुरु करना होगा ताकि लोगों के हाथ में शक्ति आ सके। गुजरात, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश में पंचायती राज का यह प्रयोग काफी सफल रहा है। लेकिन पर्याप्त वित्तीय शक्ति दिये बिना यह पंचायती राज राजनैतिक दृष्टि से बड़ा आवश्यक है क्योंकि राष्ट्र के सामने आज एक मसला यह भी है कि लोगों को वास्तविक शक्ति किस प्रकार दी जाये।

देश के सामने इस समय मूलभूत प्रश्न देश की एकता और अखंडता का है। सभी प्रकार की शक्तियां सर उठा रही हैं और देश की एकता और अखंडता के लिए खतरा पैदा कर रही है। ऐसी स्थिति में आज हमें यह देखना है कि कौन सी ऐसी बातें हैं जो हमें अलग अलग करने के बजाय संगठित कर सकती हैं। हमारे देश के वैज्ञानिकों ने विशिष्ट उपलब्धियां प्राप्त की हैं।

[श्रीमति कैलाशपति]

वे देश के विभिन्न राज्यों तथा भिन्न-भिन्न धर्मों के हैं किन्तु उन्होंने मिलकर विश्व में देश की प्रतिष्ठा बढ़ाई है ।

महोदय, भारत के प्रधानमंत्री 34 साल बाद चीन गए और यह विजिट हिस्टोरिकल विजिट सिद्ध हुई । उनके वहां जाने से क्लाइमेट आफ ट्रस्ट बना और हमने चीन के साथ ट्रेवल ट्रेड और कल्चर के क्षेत्र में तीन समझौते किये स्वयं चाइना ने उनकी विजिट को इम्पार्टेंट माना है और हमारे साथ कोआपरेशन का वायदा किया है । प्रधानमंत्री जी पाकिस्तान भी गये । वहां पाकिस्तान की प्रधानमंत्री बेनजीर भुटटों से उन्होंने मुलाकात की । इससे दोनों मुल्क एक दूसरे के करीब आये है और इससे एक नया रास्ता कोआपरेशन और दोस्ती का खुला है । इससे जो टेंशन था उसमें कमी आयेगी और दोनों देशों को परस्पर लाभ होगा । मालदीव में सरकार का तख्ता पलटने की जो कोशिश की गई थी माननीय राजीव गांधी ने शानदार तरीके से उनकी सहायता कर अपनी दोस्ती का फर्ज निभाया और हिन्दुस्तान का नाम दुनिया में ऊंचा किया । इसके लिए दुनिया के लोगों ने राजीव जी को बधाइयां भेजी हैं ।

महोदय, इन शब्दों के साथ मैं इस धन्यवाद प्रस्ताव का समर्थन करती हुं । उपसभाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे जो बोलने का समय दिया इसके लिए मैं आपकी आभारी हूं ।

ठाकुर जगतपाल सिंह (मध्य प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर माननीय सदस्य श्री मुकुल जी ने जो धन्यवाद का प्रस्ताव रखा है उसका समर्थन करने के लिये मैं खड़ा हुआ हूं । मैं अभी सुन रहा था कि नये प्रधानमंत्री की बात लोग कर रहे हैं । हमारे यहां एक कहावत है कि "सूत न कपास जुलाहे से लट्ठम लट्ठा" अभी प्रधानमंत्री होने न होने का सवाल कहां है । जो पार्टी इस बात का दावा करती है मैं उसको कुछ पुरानी यादें दिलाना चाहता हूं । जिस वक्त जनता पार्टी हुकूमत में आई थी, वह ढाई साल सत्ता में रह पाई, हमने उन्हें गाली नहीं दी हमने उनकी सरकार गिराने का प्रयास नहीं किया । लेकिन वे आपस में एक दूसरे से लड़कर स्वयं ही टूट गये । जबकि जनता ने उन्हें पांच साल के लिये चुना था । विपरीत दिशा में जाने वाले यात्री एक प्लेटफार्म पर तो खड़े हो सकते हैं किन्तु एक ट्रेन में सफर नहीं कर सकते हैं । आजादी की लड़ाई के समय हमारे पास एक आजादी का मिशन था । आजादी की वह लड़ाई हमने पूरी की और देश को आजाद किया । हमारी यह पार्टी जो 100 साल पुरानी है और पिछले 40 साल से इस देश की विकास की मंजिल को आगे ले जा रही है और आगे भी ले जाती रहेगी । हिन्दुस्तान के लोगों ने इतिहास को देखा है । History is a merciless judge. इतिहास निर्दयी न्यायकारी होता है । हिन्दुस्तान की जनता यह जानती है कि कांग्रेस ही एक ऐसी पार्टी है जो देश में आजादी लाई है और आजादी के बाद इस देश के विकास की मंजिल को आगे बढ़ाया है । हमने देश को आजाद कराने का वायदा किया था, वह हमने पूरा किया । हमने कहा था कि आजादी के बाद हम हिन्दुस्तान में प्रजातंत्र लायेंगे, हमने कहा था कि हिन्दुस्तान में हम समाजवाद लायेंगे, हमने कहा था कि हमारे देश में चाहे हिन्दू हों, चाहे मुसलमान हों, चाहे इसाई हों और चाहे पारसी हों, सब का बराबर का हक होगा । हिन्दुस्तान की जनता जानती है कि हमने जो वायदे किये थे पूरे किये । आज मैं उन महान नेताओं को महान आत्माओं को नहीं भुला सकता जिनकी कुर्बानी से इस देश में हमने आजादी ली । जिन्होंने फांसी के तख्तों को चूमा, उन्हें क्या मिला ? उनके दिल में एक तमन्ना थी कि हिन्दुस्तान आजाद होगा और नयी पीढ़ी अपने आप को खुशहाल पाएगी । अब हिन्दुस्तान के लोग सोचें अब से चालीस साल पहले का हिन्दुस्तान का क्या इतिहास

था । इस मुल्क के अन्दर सुई तक नहीं बनती थी, कपड़े की कमी थी, घरों की कमी थी, स्कूलों की कमी थी, अस्पतालों की कमी थी, सड़कों की कमी थी । गांव में अगर कोई साइकिल आ जाता था तो लोग उसको देखने आया करते थे । आज विकास की गति देखिये । गांवों में जाइये । ट्रैक्टर चल रहे हैं, स्कूल बने हुए हैं, अस्पताल बने हुए हैं, सड़कें बन रही हैं, विकास की गति इतनी तेजी से बढ़ रही है । लेकिन हमारे विरोधी पक्ष को विकास दिखाई नहीं दे रहा है । क्योंकि उनकी आंखों पर रंगीन चश्मा चढ़ा हुआ है । आज विरोधी पक्ष के कोई माननीय सदस्य नहीं हैं, क्यों नहीं हैं ? क्योंकि उनके पास कहने को कुछ नहीं है । कोई न कोई बहाना बना कर वे चले गये हैं । दो साल में राजीव गांधी के नेतृत्व में इस देश में जो विकास हुआ है विकास की जो मंजिलें हमने तय की हैं उन्हें आज कोई चुनौती नहीं दे सकता । दुनिया के लोग यह मानते हैं कि हिन्दुस्तान ने राजीव गांधी के नेतृत्व में बहुत कुछ किया है । मैं आपको थोड़ी सी याद दिलाना चाहता हूं कि आदरणीय पंडित जवाहरलाल नेहरू ने जिस वक्त कोर इंडस्ट्री की बात कही थी तो ये विरोधी पक्ष के लोग क्या कहा करते थे । बोलने के लिए मन ही नहीं चाहता क्योंकि विरोधी पक्ष के माननीय सदस्य हैं ही नहीं । जरा सामने यदि वे होते तो सुनते कि उन्होंने उस वक्त क्या कहा था ? पंडित नेहरू बड़ी इंडस्ट्री लगा रहे हैं, स्माल स्केल इंडस्ट्री नहीं लगा रहे हैं, काटेज इंडस्ट्री नहीं लगा रहे हैं । मेरे साथियो, हिन्दुस्तान के लोगों से मैं इस सदन के माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि अगर कोर इंडस्ट्री न होती, अगर लोहा न होता, अगर बिजली न होती, नहरें न होतीं, फर्टिलाइजर न होता तो इस देश का क्या होता ? कोर इंडस्ट्री के आने के बाद हमारा देश विकास की मंजिल की ओर तेजी से बढ़ने लगा । आदरणीय श्रीमती इन्दिरा जी ने जब बैंकों को नेशनलाइज किया तो विरोधी पक्ष के लोगों ने उसका भी विरोध किया । हमारी आदरणीय नेता की हत्या करवाई गई । सत्ता के बाहर के कुछ लोग यह चाहते थे किसी तरह से सत्ता उनके हाथ में आए विदेशी ताकतों के षड़यंत्र से हमारी नेता हमारे बीच में नहीं रही लेकिन वह लोग सोचते थे कि हिन्दुस्तान श्रीमती इन्दिरा गांधी के मरने के बाद टूट जाएगा, कांग्रेस टूट जाएगी, लेकिन धन्यवाद हिन्दुस्तान की जनता को है हिन्दुस्तान के लोगों ने देश में शान्ति को कायम रखा और राजीव गांधी को अपना प्रधानमंत्री चुना । जब से वे आए हैं आप देखें दुनिया के लोग कहते हैं हमारे देश में बहुत विकास हुआ है। इतिहास को देखें इतिहास निर्दयी न्यायकारी है । हिन्दुस्तान में चारों तरफ आग लगी हुई थी क्यों लगी हुई थी केवल एक ही कारण था कि अगर हमारे देश के चारों तरफ बार्डर गर्म रहते हैं तो हमारा अनप्रोडक्टिव इनवेस्टमेंट ज्यादा होगा और प्रोडक्टिव साइड में हम पैसा न लगा पाएं । हमारा नार्थ का बार्डर है, पाकिस्तान का बार्डर है, सिलोन की तरफ का बार्डर है, चारों तरफ से अगर हमें अपने को सेफ रखना है तो हमें काफी मात्रा में हथियार खरीदने पड़ते दूसरे मुल्कों के पास जो हथियार होते उनसे अच्छे हथियार खरीदने पड़ते इसलिए नहीं कि हम अपने किसी पड़ोसी मुल्क की एक इंच जमीन लेना चाहते हैं बल्कि हमें अपने मुल्क को बचाने के लिए हथियार लेने पड़ते । लेकिन अगर ऐसा होता रहता तो विकास की मंजिल बहुत तेजी से नहीं चल सकती थी और पैसा हथियारों पर लगता । उत्तर के जो हमारे प्रांत हैं बहुत से ऐसे लोग थे जो हमारे साथ कभी नहीं रहे लेकिन मैं राजीव गांधी को बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने इन सब मसलों को तय किया । सिलोन से जब आवाज आई तो हम सेवा के लिये गये, मालदीव से जब आवाज आई तो हम सेवा के लिए पहुंचे और जब हमारे उत्तर भारत के जो प्रांत हैं आज वे हमारे साथ मेन–धारा में जुड़े हुए हैं इससे बड़ा और क्या काम हो सकता था ? मैं एक चीज और याद दिलाना चाहता हूं । जब बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया तो आपको याद है कि हमारे विरोधी पार्टी के लोगों ने क्या कहा था । उन्होंने कहा था कि यह गलत किया है । मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर

[ठाकुर जगतपाल सिंह]

बैंक नेशनलाईजेशन न होता तो ग्रामीण अर्थ–व्यवस्था कि विकास कैसे होता, कहां से पैसा आता । चन्द लोग उस पूरे पैसे को अपने बीच में अपने आप लगाए हुए थे लेकिन आज वह पैसा गांव-गांव में जा रहा है और विकास की गति बढ़ा रहा है। विरोधी पक्ष हमारी सरकार को बदलने की बात कहते हैं। यह क्या बदलेंगे । यह तो आपस में टकरा रहे हैं और आपस में टकरा-टकरा कर चूर-चूर हो जाएंगे । हिन्दुस्तान की जनता बेवकूफ नहीं है । हिंदुस्तान की जनता इस बात को समझती है इस 40 साल की आजादी के बाद से एक ही पार्टी इस मुल्क में हैं जो देश का विकास कर रही है । और वह कांग्रेस है और कांग्रेस में एक ही नेता है राजीव गांधी जो इस देश को आगे ले जा रहा है। और उन्नति की मंजिल को आगे बढ़ा सकता है । तो मैं आपके माध्यम से एक बात और कहना चाहता हूं कि इस देश में इंदिरा जी के मरने के बाद एक नयी चाल चली गयी, एक गहरा षड़यंत्र किया गया था और षड़यंत्र क्या था, कि इस देश में टेरोरिज्म को बढ़ावा दिया जाये । टेरोरिज्म कोई इज्म नहीं है, एक एप्रोच है किसी मुल्क में डिक्टेटरशिप लाने के लिए । उनकी कोई नीति नहीं होती । डेमोक्रेसी में पार्टियां होती हैं, पर उनकी कोई न कोई नीति होती है । आर्थिक कार्यक्रम होता है । मैं कहना चाहता हूं कि जब हमने प्रजातंत्र के लाने की बात कही, प्रजातंत्र को लाकर उसको मजबूत करने की बात कही तो विरोधी दलों ने उसे तोड़ने की बात कही । जब हमने देश में एकता की बात कही, जब देश में सर्व धर्मों की इज्जत रखने की बात कही तो इन्होंने जाति, धर्म प्रांत के नाम देश में नफरत फैलाने का प्रयास किया उसे भुलाने की बात कही। जब हमने देश में समाजवाद लाने की बात कही, सामाजवाद के लिए हमने शोषणवादी ताकतों को जो तोड़ना शुरू किया तो आवाजें आने लगी । महोदय, जो ताकतें टूटती हैं वे ही आवाज करती हैं । कुदरत का नियम है कि जो चीज बढ़ती है वह आवाज नहीं करती, जो टूटती हैं वे आवाज करती हैं । पेड़ इतने बढ़े हुए कभी आज तक आवाज नहीं की, फसल बढ़ती है तो आवाज नहीं करती है, पहाड़ इतने ऊंचे हुए कभी आवाज नहीं हुई लेकिन एक टहनी टूटती है तो आवाज करती है, पत्थर गिरता है तो आवाज करता है, फसल कटती है तो आवाज करती है तो इसी तरह जब शोषणवादी ताकतें टूटा करती हैं तो वे आवाजें करती हैं उस शोषण को कायम रखने के लिए लेकिन हम उससे घबराने वाले नहीं हैं । हमने जो इस देश में वादा किया है कि देश के अंदर हम समाजवाद लायेंगे, हम इस देश से गरीबी मिटायेंगे, शोषणवादी ताकतों को तोड़ेंगे तो उन्हें हम तोड़कर रहेंगे, कोई रोक नहीं सकता है । लेकिन बिरोधी लोग क्या कर रहे हैं यह हिंदुस्तान की जनता जानती है, खूब अच्छी तरह से जानती है । एक बोतल में शराब भी हो, दूध भी हो, शहद भी हो, बाजार में बिकेगा ? मिलेगा कोई खरीदार ? नहीं मिलेगा । वही हालत आज विरोधियों की है । समाजवाद, पूंजीवाद, साम्यवाद अर्थात खिचड़ीवाद । जनता को बेवकूफ समझते हैं क्या, क्या हिंदुस्तान की जनता इतनी बेवकूफ है ? मुझे एक साहब ट्रेन में मिले, उनसे पूछा क्या करते हो भाई । एक बड़े अच्छे अफसर थे एक जगह । मैंने कहा कि क्या हाल है । कांग्रेस सरकार को क्रिटिसाइज करने लगे। मैंने उनसे कहा कि तुम्हारे ग्रांड फादर तक को मैं जानता हूं एक झोंपड़ा सा टूटा मकान था, साईकिल भी नहीं थी आज आर०सी०सी० के मकान में रह रहे हो, कार तुम्हारे नीचे है, 7 हजार तुम्हारी तनख्वाह पड़ती है और कहते हो विकास नहीं हो रहा है । हमारे जितने भी साथी हैं, अपने दिलों पर हाथ रखें कि आज से 30 साल पहले गांवों का क्या हाल था । आज से 30 साल पहले इस देश के अंदर कितना बड़ा शोषण था लेकिन आज हम सीना उभाड़कर चलते हैं । दुनिया के लोग आते हैं वे कहते हैं कि हिंदुस्तान इतना आगे चला गया है, वे सोच नहीं सकते थे, इस में

हमारा और आपका दोष नहीं है ... (समय की घंटी) बस दो मिनट। मेरी तो बैसे भी बोलने की तबियत नहीं कर रही है विरोधी पक्ष के कोई भी माननीय सदस्य हैं ही नहीं, सारे भाग खड़े हुए हैं। मैं तो चाहता था वे होते तो बताता कि वे कितनी झूठी बातें करते हैं जनता को गुमराह करने के लिए मैंने तो आंकड़े देकर उनको बताया कि कितना विकास हो रहा है।

आज दुनिया के जो लोग हमारे देश में आते हैं तो कहते हैं कि हिंदुस्तान बहुत आगे जा रहा है। जिस देश में सुई तक नहीं बनती थी, हवाई जहाज बन रहे हैं, कारें बन रही हैं, आज बिजली के कारखाने लगे हुए हैं, आज तेल निकल रहा है, आज शिप बन रहे हैं, क्या नहीं हो रहा है मेरे इस मुल्क में मेरे दोस्तो। हिंदुस्तान बहुत आगे चला गया है लेकिन हाल यह है कि जैसे अपना बच्चा बढ़ता है तो दिखाई नहीं देता है, जब रिश्तेदार आते हैं तो कहते हैं मुन्ना बहुत बढ़ा हो गया है। तो इसी तरह हमारे देश में बहुत विकास हो चुका है और हमें विरोधी पक्षों से कुछ भी खतरा नहीं है, ये हमारी जनता को गुमराह नहीं कर सकते हैं क्योंकि हर आदमी समझता है। कानपुर में बम पड़ता है तो सिम्पैथी होती है और स्वयं सुई चुभती है तो स्वयं को मालूम होता है। इसी प्रकार हर एक को स्वयं अहसास हो रहा है कि जहां हमारे पास फटे कपड़े थे आज टेरिलीन पहन रहे हैं, जहां साइकिल नहीं थी, मोटर साइकिल पर चढ़ रहे हैं, जहां मकान नहीं था झोंपड़ी थी, आर०सी०सी० में बैठे हुए हैं, जहां हमारे बच्चे को 30 रुपये की नौकरी नहीं मिलती थी आज वह एक हजार, दो हजार की नौकरी कर रहा है विरोधी पक्ष के लोग क्या बात करते हैं।

मैं बात कर रहा था श्रीमती इंदिरा गांधी की कि श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने खून का आखिरी कतरा इस देश की आजादी और एकता को कायम रखने के लिए दिया आज हम वायदा करते हैं कि राजीव गांधी और उनके अनुयायी इस देश के अंदर जो टैरोरिज्म है, जो देश को तोड़ने की साजिश की जा रही है, उसका शांतिमय तरीके से डट कर मुकाबला करेंगे और जो शोषणवादी ताकत हैं, उन्हें हर हालत में हम शांतिमय तरीके से तोड़ेंगे और इस देश से गरीबी मिटा कर रहेंगे आज यह भी वायदा करते हैं कि हिंदुस्तान में चाहे हिंदु हो, चाहे मुसलमान हो, या ईसाई हो उसको बराबर का हक है और इस देश में बराबर का हिस्सा रहेगा दुनिया में कोई ऐसा मुल्क है जहां हिंदु अपने मंदिर में जा सकता हो, मुसलमान अपनी मस्जिद में जा सकता हो, ईसाई अपने चर्च में जा सकता हो और सिख अपने गुरुद्वारे में जा सकता हो एक ही मुल्क है और वह है हिंदुस्तान और आज हम इस बात का विश्वास रखते हैं कि राजीव गांधी के नेतृत्व में, वह देश बहुत आगे जाएगा। हमारी विकास की मंजिल को कोई रोक नहीं सकता क्योंकि आजादी की मंजिल एक जगह आकर खत्म हो जाती है, लेकिन विकास की मंजिल कभी खत्म नहीं होती है व एक मंजिल के पूरे होने के बाद विकास की नई मंजिलें खड़ी हो जाती हैं और उससे हम घबराते नहीं है। विरोधी पक्ष के साधु को चोर कहते हैं और चोर को साधु कहते हैं। अब कर्नाटक के चीफ मिनिस्टर के खिलाफ हाई कोर्ट ने, सुप्रीम कोर्ट ने जजमेंट दिया, जनता ने चोर कहा और उसके बाद भी इस्तीफा नहीं दिया।

धन्य है हमारी पार्टी कि हमारे चीफ मिनिस्टर पर इनडाइरेक्ट लांछन लगा और उन्होंने इस्तीफा दे दिया। यह है कांग्रेस। तो यह हमको चोर कहते हैं, बेईमान कहते हैं, खुद बेईमान, खुद करप्ट, खुद चोर—सुप्रीम कोर्ट के जजमेंट के बाद भी इनको इस बात का ख्याल नहीं है कि जनता क्या कहेगी? इसलिए जनता समझती है और मैं धन्यवाद के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और इस सदन के माध्यम से हिंदुस्तान की जनता को विश्वास दिलाना चाहता

[ठाकुर जगतपाल सिंह]

हूं कि कांग्रेस ही एक ऐसी पार्टी है जो देश को आगे ले जा सकती है। गलती न कर जायें, नहीं तो यह शोषणवादी ताकतें फिर खड़ी होकर फिर इस मुल्क का शोषण करेंगी।

इसलिए मैं अंत में केवल आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया और चंकि अब विरोधी पक्ष है नहीं, इसलिए मैं क्या बोलूं, कुछ बोलने के लिये तबीयत नहीं कर रही है। इसलिए मैं आपको फिर धन्यवाद देता हूं।

श्री धूलेश्वर मीणा (राजस्थान) : आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण का, जो हमारे माननीय सदस्य, श्री सुकुल जी ने पेश किया है, उसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं।

राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में दोहराया है कि हमारा देश जवाहरलाल जी नेहरू के सिद्धांतों पर, लोकतांत्रिक समाजवादी और धर्म-निरपेक्षता के सिद्धांत पर चल रहा है।

इन्हीं आकारों पर हमारा देश आज चालीस साल की आजादी के बाद इस स्तर पर आ गया है कि वह आज विश्व में अपना स्थान रखता है।

माननीय उपसभाध्यक्ष जी, इस सदन के सभी साथियों को पता है कि एक समय था जब पंडित नेहरु जिंदा थे, उस समय युगोस्लाविया के मार्शल टीटो और मिश्र के कर्नल नासीर का यह वह समय था जब विश्व में शांति की ओर कुछ कदम बढ़ रहे थे। अगर श्री नेहरू कुछ और समय जिंदा रहते, तो इस ओर काफी प्रगति होती। परन्तु बीच में विश्व में इस प्रकार का एक तनाव पैदा हो गया, हमारा पड़ौसी राष्ट्र हमारी ओर एक घृणा की दृष्टि से देखने लगा, भारत का विकास और भारत की उन्नति उनको अखरने लगी। धीरे धीरे हमारे स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी, श्रीमती इन्दिरा गांधी जी और आज राजीव गांधी जीपंडित जी के इस कदम को आगे बढ़ाने जो का जिम्मा लिया है, उससे आज विश्व में तनाव की स्थिति धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है। और यह श्रेय हिन्दुस्तान के प्रधान मंत्री को ही मिलना चाहिये क्योंकि आज आप देखिए जब राजीव गांधी अमरीका गए, चीन गए और पाकिस्तान गए। आज पाकिस्तान में 11-12 वर्ष के मार्शल के शासन के बाद जनतंत्र आया है। बेनजीर भुट्टो यह भी चाहती हैं कि हिन्दुस्तान के साथ एक सहयोग का रास्ता अख्तियार किया जाए और शांति कायम हो, लेकिन फिर भी कुछ यह दिखता है कि उनके और उनके राष्ट्रपति जी के बीच में थोड़ा सामंजस्य नहीं बैठ रहा है। आज अमरीका के राष्ट्रपति बुश चीन जा रहे हैं। रुस के राष्ट्रपति चीन जा रहे हैं और इस प्रकार से हर एक जगह का राष्ट्रपति एक-दूसरे देशों को जा रहा है। सहयोग की भावना और आपस में विश्व में शांति की भावना से वे जा रहे हैं। हमने भी इस ओर कदम रखे हैं। जिसमें आप देखिए कि आज हमारी सेनाएं अफगानिस्तान में, हमारी सेनाएं मालदीव में भी भेजी गई थीं। जहां-जहां जरुरत पड़ी है श्रीलंका में सब जगह हमारी सेनाए पड़ी हुई हैं और आज यह देश सुरक्षित है हमारी सेनाओं की बहादुरी के कारण और इस लिए देश का विकास भी धीरे-धीरे अच्छी तरह हो रहा है। गांवों में भी जैसा कि अभी बताया गया कि साईकल को देखने के लिये लोग इकट्ठे होते थे लेकिन आज वहां लड़के लोग अपने कंधे पर रेडियों ट्रांजिस्टर ले करके चलते हैं फिरते हैं। इस प्रकार की प्रगति हुई है, फिर भी इस देश में विकास की ओर हमें बहुत अच्छी तरह से और जल्दी ही पड़ेगा क्योंकि देश में जितनी आबादी बढ़ रही उस आबादी को कन्ट्रोल करने के लिये, उनको खिलाने-पिलाने का इंतजाम करने के लिये इस देश में जितनी जमीन है उस पर खेती

की पैदावार बढ़ाई जानी चाहिये। इस ओर हमारी सरकार काफी ध्यान दे रही है। आज हमारे प्रधान मंत्री जी ने फूड प्रोसेसिंग का एक नया मंत्रालय खोला है। और इस ओर में आपका थोड़ा सा ध्यान ले जाना चाहता हूं। फूड प्रोसेसिंग का कार्य शहर में तो अच्छी तरह से किया जा सकता है लेकिन यह जो जितने फ्रूट्स या सब्जी वगैरह गांवों में उत्पन्न होते हैं उनको बचाने के लिये और प्रयत्न करना पड़ेगा क्योंकि गांवों में न तो बिजली है, न रेफ्रिजरेटर हैं और ऐसी कोई चीज नहीं है। इस प्रकार की चीजें जल्दी खराब होती हैं और उपभोक्ताओं को उसका फायदा नहीं मिलता है। इसलिए इस ओर उठाया गया सरकार का हर कदम बहुत ही अच्छा हैं और शीघ्र ही गांव तक ले जाने का प्रयत्न करना पड़ेगा।

जहां तक बेरोजगारी का सवाल है, गांवों के बच्चे आजकल धीरे-धीरे पढ़ कर निकल रहे हैं। आज हालत क्या है। आज हालत यह है कि हर बच्चा 8वीं या 10वीं पास कर लेने के बाद नौकरी की ओर दौड़ता है। कोई भी सर्विस मिल जाए। अपने घर पर या अपने गांव में वहां पर खेती में वह काम करना नहीं चाहता। इसलिए इस ओर भी सरकार का ध्यान जाना चाहिये। क्योंकि पढ़े-लिखे लोग जितने शहरों में बेकार हैं उसी प्रकार गांवों में अब यह बेकारी बढ़ने लगी है, इसलिए उन लोगों के लिये भी इस प्रकार की व्यवस्था की जानी चाहिये कि गांवों में उनके रहने की सुविधा पढ़ने लिखने की सुविधा तथा और सुविधायें दी जाएं जिससे वे गांवों को छोड़ कर शहरों में आने का प्रयत्न नहीं करें और अपने ही गांव में रह कर अपने ही गांव का विकास करें। आज हालत यह है कि हर बच्चा अगर गांव का डाक्टर बनेगा तो शहर में रहना पसंद करेगा। अगर मास्टर बनेगा तो भी शहरों में ही जाना पसंद करेगा और शहर के लोग बाहर जाना इसलिये पसंद नहीं करते हैं कि उनके बच्चे कहां पढ़ेंगे। तो इस प्रकार की जो कठिनाइयां हैं उन कठिनाइयों को सुलझाने के लिये सरकार को आगे आना पड़ेगा। माननीय कृषि मंत्री जी बैठे हैं, मैं चाहूंगा सरकार को इस ओर ज्यादा ध्यान देना है। आज आप शहरों का विकास तो कर रहे हैं मगर शहरों का विकास तो करना ही क्या है, सिफ सुविधायें देनी हैं, लकिन वास्तव में विकास करना है गांवों का।

श्रीमान, आज हमारे प्रधान मंत्री जी का यह विचार कि देश का जो शासन है, उसका सन्ट्रलाइजशन किया जाना चाहिये, बहुत अच्छा है। आज जिला परिषदों को, पचायतों को, ग्राम पचायतों को अधिक से अधिक पावर देने के लिये सम्मेलन किए जा रहे हैं। सभाएं हो रही हैं और हमारे विरोधी दल के भाई, जो इस समय बठे हुय नहीं हैं, वह कहते हैं कि इस प्रकार का कार्य जो है, उसके पीछे शक्तियों को केन्द्रित करने की सरकार की मंशा हैं। मैं तो यही चाहूंगा कि इससे हर गांव की पंचायत के पंच को, प्रधान को, परिषदों जिला और जिला प्रमुखों को अगर हम शक्ति देंगे और वह उसका इस्तमाल सही ढ़ंग से करेंगे तो सहीं ढ़ग से गांवों का विकास होगा। जब तक उनको सही ढ़ग से शक्ति या पावर नहीं देंगे, तब तक आप सोचिए किस प्रकार से वह विकास कर पाएंगे। इसलिये मैं माननीय प्रधान मंत्री जी का बहुत बहुत आभारी हुं। मैं स्वयं भी गांव से आता हूं और गांव के लोगों की स्थिति से परिचित हूं, मैं ज्यादा जान सकता हूं बनिस्बत जो हमारे भाई शहरों में रहते हैं।

महोदय मैं जिस प्रदेश से आता हूं उस प्रदेश में कहीं कहीं तो एकदम सूखा है और कहीं कहीं कभी कभी बाढ़ आ जाती है। वहां पानी का जो लवल है वह धीरे-धीरे नीचे होता जा रहा है। वैसे तो आप कहीं भी हिन्दुस्तान का कोई हिस्सा ले ल, वाटर लेवल धीरे-धीरे नीचे जा रहा है। और वज्ञानिकों का इस संबंध में कहना है कि इस प्रकार से धीरे धीरे पानी का लवल बहुत नीचे चला जाएगा। इससे पानी पर निर्भर

[धूलेश्वीश्वर मीणा]

रहने वाले, सिचाई के साधनों के लिये पानी पर निर्भर रहने वाले किसानों के लिये एक अंधकारमय समय आने वाला ई। इसलिये मैं निवेदन करुंगा कि जहां (परेनियल) रिवरस हैं जिनमें पानी स्थाई वहता बहता रहता है, उस पर छोटे-छोटे बांध बनाए जायें। इससे बड़े बांध बनाने से लोंगो की जमीन डूब में आती है और वह जमीन की वैसे भी कमी है तो चूकि जमीन भी डूब में आने से बचेगी और छोटे बांध बनाने से उस पर्टिकुलर एरिय का वाटर लेवल भी ऊंचा रहेगा। इसलिए आपको इस प्रकार के काम हाथ में लेना होगे।

श्रीमान जी, मैं आपका और हाउस का ध्यान थोड़ा सा इस ओर दिलाना चाहूं। कि हमारे देश की प्रगति को सहन न करने वाले जो तत्व हैं, बाहरी शक्तियां हैं, उस पर भी ध्यान देना होगा। इस देश में प्रगति को बाधा पहुंचाने के लिए बाहरी शक्तियां, विशेषकर हमारे पड़ौसी राष्ट्र पाकिस्तान में आतंकवादियों को एक तरफ ट्रेंड किया जाता रहा इस देश, में तोड़ फोड़ करने के लिए। मैं पंजाब की जनता को धन्यवाद देता हूं वहां सरकार की तरफ से जो मदद होती है, वह तो सरकार करती ही है लेकिन टेरोरिस्टों का सामना करने के लिये आज वहां का जन-जन, बच्चा-बच्चा तैयार है। इसी प्रकार से देश के दूसरे भागों में, जैसे आंध्र प्रदेश में, बिहार में आतंकवादियों ने भी जाल फैला रखा है, ड सभी भाई बहनों से निवेदन करुंगा कि इस प्रकार के राष्ट्र की प्रगति के खिलाफ काम करने वाली ताकतों का सामना करने के लिये तैयार रहना चाहिये, इस प्रकार की ताकतों को सिर ऊंचा नहीं उठने देना चाहिये। इसके साथ ही यह भी सभी साथियों से निवेदन करुंगा कि जो राष्ट्र हमारी उन्नति में बाधा डालते हैं, उनका सामना करने के लिए हमको हमशा तैयार रहना होगा।

श्रीमान जी, जहां तक राजस्थान का संबंध है वैसे शास्त्री जी का थोड़ा सा हिट मुझे मिला है, आप सभी लोग जानते हैं कि पश्चिम राजस्थान हमेशा रेगिस्तान ही रहा है। प्रश्न यह है कि उस रेगिस्तान को कैसे बचाया जाय क्योंकि हवाओं से, हवाओं में झोंको से रेत धीरे-धीरे आगे सरकता जा रहा है वैसे इस ओर वर्ल्ड बैंक भी काम कर रहा है, हमारी एक संस्था भी काम कर रही है, अरावली की पहाड़ियों के बीच में कुछ इस प्रकार के पेड़ लगाकर के उसे रोके जाने का या इंदिरा नहर जो चल रही है उससे उसको रोकने का कुछ प्रयास चल रहा है। लेकिन कुछ हिस्से ऐसे भी हैं कि जैसा कि मैंने पहले बताया कि कहीं कहीं सूखा पड़ता है, लेकिन राजस्थान में सारे एरिये में सूखा-ही-सूखा है। इसलिए मैं सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि पीने का पानी उपलब्ध कराने के लिए जगह-जगह कुएं और ट्यूब वल खोदे जाएं, तालाब बांधें जाकर पानी रोका जाय। तभी यह समस्या हल हो सकेगी।

महोदय, इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया।

उपसभाध्यक्ष (श्री हेच. हनुमनतप्पा) : श्री बसुदेब महापात्र...श्री बी.एल. पवार।

श्री भंवर लाल पवार (राजस्थान) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण दिनांक 21 फरवरी, 89 पर धन्यवाद के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं।

मान्यवर, भारतवर्ष का स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास यह बताता है कि जन आंदोलन से खड़ी हुई एक संस्था ने, जिसने 60 साल तक अपना खून बहाक संकल्प के साथ, डेडीकेटेड भावना से स्वतंत्रता हासिल की। उसके पश्चात् इसी संस्था ने, कांग्रेस संस्थाने 42 साल से अधिक समय तक इस आजादी

संरक्षण के लिए काम करते हुए, भारत की एकता और अखंडता को कायम रखने के लिए अब तक जितने कार्य किए हैं उसके मुकाबल में और उस संस्था द्वारा चलाई जा रही सरकार के माध्यम से जो भारत की प्रगति हुई है उस प्रगति का इस साल का जो विवरण माननीय राष्ट्रपति जी ने प्रस्तुत किया है मैं इसको 'मिरर आफ द इयर आफ द सेंटर' की संज्ञा देता हूं ।

इस अभिभाषण में भारत के विकास के लिए किए गए कार्यों का जो वर्णन किया गया है, मैं उसके आंकड़ों में नहीं जाना चाहूंगा, लेकिन इस संस्था ने जो जद्दो-जेहाद छेड़ा था –राष्ट्रीयता, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, गुटनिरपेक्षता की आधारभूत नीतियों पर चलकर इस राष्ट्र के विकास का जो बीड़ा उठाया था, हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नेतृत्व में और उनके सही उत्तराधिकारी हमारे स्वर्गीय प्रथम प्रधान मंत्री माननीय पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इन नीतियों को लेकर भारत के निर्माण का कार्य शुरू किया था, उसे हमारी प्रिय नेता स्वर्गीय इंदिरा गांधी जी ने इन नीतियों के माध्यम से रचनात्मक विकास किया । अब हमारे नौजवान प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी जो ने इन आधारभूत नीतियों को अमली जामा पहनाना शुरू किया हैं। शांति, निरस्त्रीकरण और न्यायसंगत विश्व व्यवस्था को समर्पित विदेश नीति के आधार पर भारत की प्रभुसत्ता, राष्ट्रीय अखंडता और आधुनिक राष्ट्र के रूप में भारत का विकास जो हमारे प्रधान मंत्री जी कर रहे हैं, वह विश्व में एक मिसाल के रूप में भजा जाता है । इंदिरा जी ने राष्ट्र का विकास किया उन्होंने सभी मुद्दों से ऊपर उठकर अपने जीवनकाल में ऐसे कार्य किये जो विश्व इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाएंगे । वह केवल राष्ट्रीय नेता नहीं थीं, वह विश्व नेता थीं । वर्ष 1977 से 1979 का कुछ समय छोड़कर जबकि जनता शासन सत्ता में आई थी, हम लोग फिर सत्ता में थे । मैं एक उदाहरण श्रीमती इंदिरा गांधी का देश चाहूंगा कि वह किस प्रकार से एक महान और दूरदर्शिता रखनेवाली नेता थी । कुछ रेल मजदूर व कर्मचारी जनता शासन के दौरान रेल हड़ताल का नोटिस देना चाहते थे । वे इनके पास पहुंचे कि हम नोटिस देना चाहते हैं । कुछ रेल मजदूर कर्मचारी उनके पास पहुचे कि हम रेल हड़ताल का नोटिस देना चाहते हैं । इंदिरा जी ने कहा कि आपके इस कार्य में आप स्वय सोचे कि राष्ट्र का हित होने वाला है या अहित होने वाला है । जब उन्होंने इतनी दूर-दृष्टि से विपक्ष में होते हुए भी उन नेताओं को यह बताया कि यह राष्ट्र के हित की बात नहीं है तो उन सब मजदूर कर्मचारियों ने इस बात को माना कि विश्व में अगर कोई राष्ट्र नीति में और विश्व नीति में कोई नेता है तो इंदिरा गांधी है । उस महान नेता ने हमेशा पार्टी से ऊपर रहकर राष्ट्र के विकास को सदैव सोची थी । हमारे विपक्ष के भाई आज सदन में नहीं हैं, क्या उनमें इस प्रकार की महानता है, सोच की शक्ति हैं ? आप देखिए कल ही एक घंटे तक सदन की कार्रवाई नहीं चलने दी और इसके कारण अगर आंकड़े आपके सामने हों तो एक घंटे का लाखों रुपए का खर्च इस ससद को चलाने में लगता है । यह राशि जो कल इन्होंने खराब की है, यह अगर देश के विकास में लगती तो देश का विकास होता । लेकिन हमारे विपक्ष के भाइयों ने अब इस प्रकार के कार्य करने शुरू किए हैं । इनकी कोई राष्ट्र के हित में नीति ही नहीं है, न कोई सिद्धांत है । मैं विपक्ष के भाइयों से यह कहना चाहूगा कि उन्होंने इस संबंध में जो भी अपने विचार रखे, उनको मैंने अच्छी तरह से सुना पढ़ा । उसको हम इस प्रकार से देखते हैं कि जैसे केवल उनका एक ही चक्षु है, दूसरा चक्षु तो उनका बिल्कुल बंद है । अगर एक राष्ट्र की पार्टी के रूप में खड़ा होकर कोई व्यक्ति संसद में बोले और केवल यही कहे कि यह नहीं हुआ या आलोचनात्मक रूप से कहकर के जनता को यह दिखाना चाहे कि वह विश्व में अपने राष्ट्र के लिए कुछ करने जा रहे हैं, मैं उन माननीय सदस्यों से यह

[श्री भंवर लाल पंवार]

विनती करना चाहूंगा कि आप दोनों चक्षुओं से देखें और भारत की जो प्रगति हो रही है, विकास हो रहा है उसकी ओर भी ध्यान रखें। केवल आलोचना को छोड़कर, समालोचना के रूप में आप अपने आपको समाज के सामने, देश के सामने प्रस्तुत करें।

हमारी पार्टी, केन्द्र सरकार ने राष्ट्र की प्रभुसत्ता को, अखण्डता को सदैव महत्व दिया है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, हमारी प्रिय नेता दिवंगत प्रधान मंत्री इंदिरा जी ने अपना बलिदान देकर राष्ट्र की प्रभुसत्ता एवं अखण्डता को बरकरार रखा। अल्प समय के लिए भारत की जनता ने हमारे विपक्षी भाइयों को सरकार बनाने का अवसर दिया था, परन्तु वे अपना कार्यकाल भी पूरा नहीं कर सके। जनता शासन के भूतपूर्व प्रधान मंत्री भाई मोरारजी देसाई जी ने, इस समय मैं यह उदाहरण देना चाहूंगा कि राष्ट्र की प्रभुसत्ता के प्रति उनका ध्यान किस प्रकार से था ? जब अमरीका में वह अमरीका के राष्ट्रपति के सामने गए, तो उन्होंने अपने घुटने टेककर भारत की खरी विदेश नीति, जो कि शांति एवं विकास के लिए अणु-शक्ति का प्रयोग करने की नीति थी, उस समय उन्होंने शांति के लिए भी इस अणु-शक्ति का प्रयोग नहीं करेंगे, ऐसी बात कह दी। वह नीति अगर चलती रहती तो भारत का विकास कैसे होता ? भारत की जनता ने उसको देखा और उन्होंने अपनी गलती को सुधारकर इस राष्ट्र को आगे ले जानेवाली, इस महान पार्टी को वापिस सत्ता में लाया।

हमारी प्रभुसत्ता एवं सहयोग की नीति को हाल ही में विश्व के देशों ने देखा है। लंका में, मालदीव में लोकतांत्रिक सरकार को बनाने में, बचाने के लिए जो भारत ने, भारत के युवा प्रधान मंत्री ने सैनिक सहायता प्रदान कर जो उन सरकारों को बचाया है, उसकी अमरीका के राष्ट्रपति ने भी सराहना की है। यह है हमारा एक दूर-दृष्टि से काम करने वाला युवा प्रधान मंत्री जिसको कि अमरीका के राष्ट्रपति ने भी सराहा है, उनकी कूट-नीति, दूरदर्शिता के कारणवश। हमारी पार्टी एवं सरकार ने भारत की अखण्डता के लिए शक्ति प्रदान करने के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी दी है। आपसी समझौते के माध्यम से उत्तर पूर्व का भाग राष्ट्र के लोकतंत्र की मुख्य धारा से जुड़ गया है।

निरस्त्रीकरण के बारे में हमारे नौजवान प्रधान मंत्री जी ने भगीरथ प्रयास करके दोनों महाशक्तियों को एक टेबल पर बैठाकर जो अभूतपूर्व कार्य किया है वह विश्व इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा।

हमारे युवा प्रधान मंत्री जी ने दृढता से कदम उठाकर भारत की युवा-शक्ति को पहचाना और आजादी के बाद पहली बार मतदान की आयु घटाकर 18 वर्ष कर राष्ट्र-निर्माण में युवा शक्ति को भागीदार बनने का अवसर प्रदान किया है। सप्तम पंचवर्षीय योजना के अंदर युवा प्रधान मंत्री जी के कार्यकाल में तीव्र गति से कई उपलब्धियां हुई हैं। भारत की जनता में यह विश्वास पैदा हुआ है कि जिस प्रकार आजादी की लड़ाई में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संकल्प के साथ डेडिकेटेड भावना से कार्य किया गया था, उसी भावना का पुनः संचार स्वतंत्र भारत के विकास एवं स्वतंत्रता की रक्षा के लिए हमारे युवा प्रधान मंत्री राजीव गांधी जी ने जनजन में भर दिया है और वे उत्साह, डेडिकेटेड भावना से इसके लिए प्रवृत्त हुए हैं और भारत विकासशील देशों की अग्रिम पंक्ति में पहुंचकर विकसित देशों के समानान्तर पहुंचने में सक्षम हो चुका है।

मान्यवर, मैं आंकड़ों में नहीं जाना चाहता हूं, लेकिन उद्योग कृषि, विज्ञान, रिसर्च, अंतरिक्ष, देश की प्रतिरक्षा के क्षेत्र में जो आश्चर्यजनक आशाओं और आकांक्षाओं से अधिक तीव्र गति से

सरकार द्वारा योजनाबद्ध तरीके से प्रगति की है वह किसी से छिपी नहीं है। यही कारण है कि विश्व परिप्रेक्ष्य में भारत की अल्प समय में त्वरित गति और विकास को देखकर पड़ोसी एवं अन्य देशों में क्षोभ का वातावरण हमारी प्रगति में अवरोध उत्पन्न करने के लिए कर रहे हैं और आतंकवाद को बढावा देकर या नशीलें पदार्थो की तस्करी करा रहे हैं। लेकिन हमारी सरकार एवं हमारे युवा प्रधान मंत्री हर समस्या का हौसले एवं बुलंदी के साथ मुकाबला कर रहे हैं।

महोदय, अब मैं देश की बढती हुई आबादी की समस्या की ओर सदन का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं जो हमारे द्वारा किए जा रहे अभूतपूर्व विकास को निगलती जा रही हैं। देशवासियों को अपने स्तर पर भी इस गंभीर समस्या से जूझने की आवश्यकता है। यदि सरकार को इस समस्या के निवारण में जन जन का सहयोग मिल जाए तो हमारे प्रधान मंत्री जी भारत के गौरव को विश्व में पुनः स्थापितकर रहे हैं और विश्व गुरु के रूप में पूजे जाने वाले भारत को फिर से उस ओर अग्रसर करने में सफल होंगे, इसके साथ ही भारत के अंदर भी जो दूध दही की नदियां बहाने वाली बात हैं, वह सार्थक हो जाएगी।

मान्यवर, शताब्दी के विकराल महाकाल के कारण भारत को गत वर्ष गंभीर कठिनाइयों से जूझना पड़ा था। उसके बावजूद भी हमारे प्रधान मंत्री जी ने हौसले से उसका मुकाबला किया। राजस्थान की जनता तो गत पांच वर्षो से अकाल से जूझ रही थी, उसकी हालत सुधारने के लिए केन्द्र सरकार का और युवा प्रधान मंत्री जी का सहयोग न मिलता तो मैं समझता हूं कि वहां जनता एवं मवेशी काल के कगार में पहुंच जाते। हमें जो पिछलें 40 साल में राजस्थान में बाढ़ और सूखे पर खर्च करना पड़ा उसको यदि जोड़ दें तो पता चलेंगा कि जो धनराशि पिछलें चालीस सालों में खर्च की गई वही राशि प्रधान मंत्री के सहयोग से राजस्थान को पिछलें साल दी गई और राजस्थान की जनता ने साहस के साथ, धैर्य के साथ अकाल का सामना किया और उसे झेला।

इसी के साथ मैं यह भी कहना चाहता हूं कि पश्चिमी राजस्थान में आज पानी की, जल की विकट समस्या हैं और पानी की सतह लगभग 400 फीट से भी गहरी चली गई हैं। हमारे यहां करीब तीस साल से चल रही इंदिरा गांधी नहर के संबंध में मैं यहां कहना चाहता हूं क्योंकि यहां हमारे माननीय कृषि मंत्री जो विराजमान हैं, कि यदि हिमालय का पानी हमारे राजस्थान में इंदिरा गांधी नहर के द्वारा पहुंच जाता है। और शास्त्री जी, मैं इस सदन में निवेदन करना चाहूगा कि इसके पूरे होते ही केवल राजस्थान 25 साल तक पूरे हिन्दुस्तान का पेट भरने के लिए अनाज आपको देता रहेगा। यह बिल्कुल वास्तविकता हैं इसलिए आप इस ओर थोड़ा विशेष ध्यान दें। आपने रेगिस्तान को कम करने के लिए एक योजना प्रारम्भ की 1983 में। उस योजना का शिलान्यास राजस्थान के जोधपुर शहर में किया गया। 83 के बाद 89 तक कुछ प्रक्रियाओं के कारण वह कार्यान्वित नहीं हो पा रही हैं लेकिन मैं समझता हूं आप ने अप्रैल 89 से नेशनल एरिड जोन फारेस्टरी रिसर्च सेन्टर जोधपुर में स्थापित किया हैं उसको पूरी क्षमता के साथ आप चलायें ताकि वह जो फारेस्ट डेवलप होगा उससे जो बढ़ता हुआ रेगिस्तान है वह कम होता जायेगा। पर्यावरण की दृष्टि से भी राजस्थान वैसें भी बहुत ठीक है और वह और ज्यादा ठीक होगा।

हमारे विपक्ष के भाई यहां नहीं हैं। मैं उनको कहना चाहता था। आज तक हिन्दुस्तान की हिस्ट्री में यह हमेशा समस्या रही है आजादी के समय से। नेतृत्व का झगड़ा हिन्दुस्तान को

[श्री भंवर लाल पंवार]

हमेशा से झेलना पड़ता रहा है । आजादी के बाद सही उत्तराधिकारी पंडित जी हमारे सामने थे। आजादी के मिलते ही पंडित जी हमें प्रथम प्रधान मंत्री मिल गये और भारत का सही नेतृत्व हो गया। उस समय नेतृत्व का संघर्ष विपक्ष के भाइयों ने नहीं किया। 17–18 साल तक एक छत्र राज चलता रहा। भाखड़ा-नागल, तुंगभद्रा और हीराकुण्डा जैसे बड़े बड़े डैम बने, भिलाई, बोकारो जैसे बड़े-बड़े प्लांट लगे। उसके कारण भारत की नीव जमी। परन्तु उसके पश्चात् शास्त्री जी हमें एज ए प्राइम मिनिस्टर प्राप्त हुए। शास्त्री जी के अल्पकाल में वह कार्य चलता रहा लेकिन उनके देहावसान के बाद फिर नेतृत्व का झगड़ा खड़ा हुआ। विपक्ष के लोग बल्कि स्वयं इस संस्था में भी मैं कहना चाहूंगा, यह चला। हमारी प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को 66 से लेकर 69 तक इस संघर्ष से जूझना पड़ा। 69 में इस विकराल रूप को लेकर श्रीमती इन्दिरा गांधी ने नेशनलाइजेशन स्कीम जो चलाई थी उसको वह विपक्ष नहीं चलने दे रहे थे लेकिन उन्होंने उसको कराया और उसके बाद प्रिवी पर्स को खत्म किया। 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध हुआ। उसमें वह एक विश्व नेता के रूप में उभर आयी और नेतृत्व का झगड़ा समाप्त हुआ। उनके द्वारा जब तीव्र गति से काम होने लगा था तो बाहर की शक्तियों ने यह देखा कि भारत इतनी तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है और इनके अधिक बढ जाने से हमारा क्या स्थान रह पायेगा तो उन्होंने भारत के अंदर वैसी शक्तियां उभारी जिससे हमें उन समस्याओं को झेलना पड़ा। उसके बाद हमारे युवा प्रधान मंत्री ने समय की स्थिति को झेल कर इसका नेतृत्व संभाला और उन्होंने कहा कि हमें 21वीं सदी में जाना है तो हमारे विपक्ष के भाई साल भर तक तो उनको देखते रहे। वह उनको अच्छे, सुन्दर और बढ़िया काम करने वाले लगे। उनकी बहुत प्रशंसा होने लगी । 85 में जब वह अमरिका गये और विश्व के सामने जिस प्रकार से भविष्य की चर्चा और 21वीं सदी की बात की तो हमारे विपक्ष के उन भाइयों ने देखा कि हम अब अपने जीवन में नेतृत्व को हासिल नहीं कर सकेंगे तो इस दृष्टि से 86 में वे एक के बाद एक इस नेतृत्व को गिराने के लिए ऐसे प्रयास करने लगे जिससे जिहाद छिड़ पाये। एक ऐसा

4 P.M. भ्रम पैदा करने की उन्होंने कोशिश की। समय पर लोगों ने स्थिति को देख लिया, परख लिया। जैसे जैसे बातें सामने आती गई जनता ने देख लिया कि यह विपक्ष बकार है। इसके बाद व विपक्ष वाले एक मिलने की साजिश करने लगे। हमारी जनता ने देख लिया है कि ये कसे हैं। जसा अभी ठाकुर साहब ने कहा कि एक बोतल में शराब दूध और शहद को मिलाने की प्रक्रिया चल रही है। इसको भारत की जनता अच्छी तरह से जानती है। इन लोगों का सपना कभी भी साकार नहीं हो सकता है। कांग्रस की सस्था अपने आप में एक समुद्र है। मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि गंगा और यमुना का निश्छल पानी समुद्र में जाकर मिलता है। आजादी प्राप्त होते वक्त ये सभी लोग गंगा और यमुना के साथ थे। जब प्रवाह जरा तेज हुआ, पानी किनारों के आगे बढ़ने लगा तो ये सत्ता के लोलुप लोग जिन्हें सत्ता में हिस्सा नहीं मिला, अपने आप को अलग करके अलग पार्टी के रूप में सामने आने लगे। वह अलग निकला हुआ पानी कुछ समय बहता है, यह प्रकृति का नियम है। जहां निरन्तर बहने वाला पानी न हो वह पानी कुछ समय के बाद बहना बद हो जाता है। यही स्थिति आज तक विपक्ष की रही है। यह बात भी सही है कि गंगा और जमुना का पानी समुद्र में जाकर समुद्र बन जाता है। उसमें कुछ गंदा पानी भी आ जाता है जो नालों और बरसाती पानी से बनता है। लेकिन समुद्र का ऐसा नियम है, प्रकृति का नियम है

कि समुद्र में ज्वार भाटा आते रहते हैं और वे गन्दे पानी को उछाल कर बाहर निकाल देते हैं। समुद्र की गहराई में जो स्वच्छ, नीला और साफ पानी होता है वही वहां पर रह पाता है और गंदा पानी नालों के जरिए किनारों पर आ जाता है जो बाद में काई के रूप में बदल जाता है जो सिर्फ लोगों के पैर फिसलाने का काम करता है। यही रोल विपक्ष का रहा है। हम देखते हैं कि जो लोग 1985 तक हमारे साथ थे, हमारे साथ रहकर अपने आप को निखार रहे थे, उन्होंने देश के सामने यह दिखाने की कोशिश की कि हम देश को आगे ले जाने वाले हैं और देश के दूसरे नम्बर के व्यक्ति हैं। सरकार की प्रक्रिया में यह बात निकलती है कि सरकार का जो भी निर्णय होता है वह पूरा निर्णय पूरी केबिनेट का होता है। किसी निर्णय को जब प्रधानमंत्री स्वीकार करते हैं तो उसका इम्प्लीमेंटेशन मंत्री करता है। लेकिन कुछ प्रक्रिया एसी चली कि जो व्यक्ति कार्यान्वयन करने वाला था वह समझने लगा कि मैं सब कुछ कर रहा हू और उस दृष्टि से उस काम को उन्होंने जनता के सामने फैलाना शुरू किया। लेकिन हिन्दुस्तान की जनता जानती है कि ये लोग जनता का भला नहीं कर सकते हैं। समय ने बता दिया है, और 1988-89 में विपक्ष ने जो कुछ किया है वह इस बात का रिकार्ड है कि ये लोग जनता का कितना भला कर सकते हैं। इन गठजोड़ों से जनता का भला नहीं हो सकता है और हमारे देश की जनता इस बात को अच्छी तरह से जानती है, उसने इनको परख लिया है। सन् 1977 से 1979 तक की इन लोगों की गतिविधियों को जनता ने देख लिया है। अब चार-छः महीनों से उसी स्थिति को ये लोग फिर लाना चाहते हैं। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि अथाह सागर से निकला हुआ मोती या रत्न भी भारत के विकास के कदम आगे बढ़ा सकता है, भारत को विकास के पथ पर ले जा सकता है। हमारे युवा प्रधान मंत्री ने मानव साधन विकास मंत्रालय का पहली बार गठन किया और इसकी एक नई शुरुआत की यह उन्होंने किसलिए किया? इसलिए किया कि भारत ने भौतिक विकास समय के साथ अधिक किया, हमें चारित्रिक और सांस्कृतिक विकास भी करना आवश्यक है। तो भारत में चारित्रिक विकास के लिये, आध्यात्मिक विकास के लिये हमारे युवा प्रधान मंत्री जी ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय नाम से एक नया मंत्रालय खोला। इससे एक नई फिजा बनी। उन्होंने धर्मनिरपेक्षता को एक गति दी और अलग अलग धर्मों वाले सब लोग एक ही भाषा में जुड़ने की प्रक्रिया करने लगे। लेकिन कुछ तत्व जो जाति-वाद, धर्मवाद के नाम पर लोगों को फुसलाने वाले हैं, जनता उन लोगों को समझ चुकी है। हमारे प्रधान मंत्री का जो प्रयास है वह एकदम आंतरिक हृदय से है, वे डेडीकेटेड भावना से इस काम को कर रहे हैं। हमें आशा है कि वे सदैव आगे बढ़ते रहेंगे। वे पीछे मुड़कर देखने वाले नहीं हैं। किसी भी व्यक्ति ने जब यह कहने का प्रयास किया कि मैं आपके साथ नहीं रहना चाहता तो उन्होंने उस पर कभी सेंकड थाट नहीं दिया और कहा कि अगर हमारे साथ चलना है तो चलो यह कारवां तो आगे बढ़ता ही रहेगा। गांधी जी ने जो मार्ग दिखाया था, पंडित जी ने जो नीतियां बताई हैं और इंदिरा जी ने जिन नीतियों पर अमल किया हमारे युवा प्रधान मंत्री उस पर आगे बढ़ रहे हैं और आगे बढ़ते रहेंगे। रोटी कपड़ा और मकान ये तीन बातें मुख्य हैं। कपड़ा तो, हमारे भारत के निर्माता पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने 1956 से ही कपड़ा उद्योग को प्रोत्साहन देकर इस समस्या को हल कर दिया। कपड़ा जो बाहर से बनकर आता था वह हिन्दुस्तान में ही बनने लगा और इतनी ज्यादा तादाद में बनने लगा कि यह समस्या तो उन्होंने अपने समय में ही पूरी कर दी। रोटी की समस्या हरित क्रांति के माध्यम से, भारत जो

[श्री भंवर लाल पंवार]

विदेशों से अनाज मंगाता था, वह इस क्षेत्र में स्वावलंबी हो गया और अब वह अनाज बाहर एक्सपोर्ट कर रहा है। मकान की समस्या हमारे युवा प्रधानमंत्री हाउसिंग स्कीम बनाकर हल करने का प्रयास कर रहे हैं। आपने देखा होगा कि पिछले दो सालों में, और इस बजट में भी देखा होगा कि हाउसिंग के लिए नये बैंक खोल रहे हैं, हजारों की तादाद में, और स्टेट गवर्नमेंट को कहा जा रहा है और सेंटर के द्वारा उनको करोड़ों का बजट दे कर इस समस्या को हल करने का प्रयास कर रहे हैं और झुग्गी झोंपड़ी वालों के लिए राहत पहुंचा रहे हैं। हमारे युवा प्रधानमंत्री ने पंचायती राज को सशक्त बनाने की प्रक्रिया को प्रारम्भ किया है। वे जिलाधीशों से मिले हैं, मुख्य मंत्रियों से मिले हैं और वे यह चाहते हैं कि भारत के गरीब से गरीब तबका भारत के विकास के साथ जुड़े और वह अपने आप को यह समझे कि वह स्वतंत्र भारत का एक नागरिक है। इसी कारण इस नये बजट में अनएम्पलायमेंट की समस्या को समाप्त करने की योजना बनाई है। जवाहरलाल नेहरू रोजगार योजना के माध्यम से भारत की गरीब जनता को एक नया रास्ता दिखा है और उनकी कांग्रेस की इस सरकार में आस्था जमी है।

मैं अंत में इतना ही कहूंगा कि हमारे विपक्ष के भाई इसी तरह देख रहे हैं जिस तरह से छींके में दही पड़ी है और नीचे बिल्ली कूदती रहती है कि कब छींका टूटे और कब दही हाथ लगे। लेकिन ऐसा कभी होने वाला नहीं है। भारत की जनता बहुत विचारशील हो चुकी है और वह जानती है कि उसका हित करने वाला कौन है। धन्यवाद।

श्री बंधु महतो (बिहार) : आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर माननीय सदस्य पी० एन० मुकुल द्वारा जो धन्यवाद का प्रस्ताव आया है, उसका मैं हार्दिक समर्थन करता हूं। वास्तव में पंडित जवाहरलाल नेहरू जो आधुनिक भारत के निर्माता थे उन्होंने सच्चाई के साथ भारत को आगे बढ़ाया है। जो भी मानवीय गुण और देश हित के लिये जो लाभकारी बातें थी, सच्चाई के साथ उन्होंने उन बातों को अपने प्रशासन के समय में लागू किया था।

[उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) पीठासीन हुए]

उनका समाजवाद वास्तव में इस देश के लिए कल्याणकारी सिद्ध हुआ। मिश्रित अर्थ-व्यवस्था प्रणाली के आधार पर उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र में अनेक उद्योगों को खड़ा किया जिससे इस देश में औद्योगिकीकरण हुआ और इस देश का आर्थिक विकास आज भी तेजी से हो रहा है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने शुरू से ही धर्म-निरपेक्षता, समाजवाद, राष्ट्रवाद, गुट-निरपेक्षता इत्यादि सिद्धान्तों को ले कर इस देश को आगे बढ़ाया था और दूसरे देशों को भी इस पर चलने के लिए आह्वान किया था। आज इन्हीं उद्देश्यों को ले कर उनके आदर्शों को ले कर हम पंडित जवाहरलाल नेहरू की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। आज उनका शताब्दी वर्ष हम मना रहे हैं। यह भारत के लिए यहां की जनता के लिए गौरव की बात है। धर्म और राजनीति का जहां तक सवाल है धर्म एक अच्छी चीज है इससे आचार-विचार अच्छे होते हैं लेकिन जब यह संकुचित दायरे में आ जाता है तो इससे नुकसान भी अधिक होता है। बहुत सी संस्थाएं धर्म का दुरुपयोग करती थीं उन पर अंकुश लगाने के लिए हमारी सरकार ने धर्म और राजनीति को अलग करने के लिए एक कानून बनाया है तथा इस स्थिति से जूझने के लिए आगे भी कानून बनाया जा सकत है। यह देश धार्मिक सहिष्णुता, विभिन्नता में एकता के सिद्धान्त को लेकर आगे बढ़ता आया है और यह भारत एक रहा है लेकिन आज आतंकवाद, उग्रवाद, अलगाववाद इत्यादि की भावना को दबाने के लिए काफी प्रयास किये जा रहे हैं। हिंसा को आगे नहीं बढ़ने दिया जाएगा यह हमारी सरकार का दृढ़ संकल्प

है । बातचीत से विचार-विमर्श से सभी मुद्दों को सुलझाया जा सकता है इसके लिए भी प्रयास जारी है । अभी उत्तर पूर्व के इलाके में उग्रवाद और अलगवाद की समस्या, काफी बढ़ गई थी । असाम में, मिजोरम में, त्रिपुरा में, दार्जिलिंग, में समस्या को राजनीतिक स्तर पर हल कर लिया गया है । आज इन क्षेत्रों के लोग राजनीति की मुख्य धारा में आ गये हैं और इससे उन लोगों को काफी लाभ हो रहा है । आज यह सरकार किसानों के लिए बहुत कुछ कर रही है । बराबर किसानों की समस्याओं पर सरकार अपनी निगाह केन्द्रित करके रखती है । हमारे बिहार में तो सर्वप्रथम इतनी बाढ़ आती थी कि लोग तंग और तबाह रहते थे । लेकिन जवाहर लाल नेहरू के समय में ही सभी नदियों के तटों पर बांध दिया गया जिससे बाढ़ बहुत कम हो गयी । आज किसानों को नेशनलाइज्ड बैंकों से 17 प्रतिशत ऋण मिल सकता है । इसके लिए व्यवस्था की गयी है । शुरू-शुरू में तो किसानों को बैंकों के दरवाजे पर जाना ही असम्भव लगता था, लेकिन श्रीमती इंदिरा गांधी को धन्यवाद है जिन्होंने बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर जनसाधारण के लिए बैंकों के दरवाजे खोल दिये । आज "नाबार्ड" के माध्यम से 30 प्रतिशत किसान ऋण ले सकते हैं । 1800 करोड़ रुपये की जगह पर 2550 करोड़ रुपये इसके लिए दिये गये हैं । आज किसानों की सुविधा के लिए बहुत से काम किए जा रहे हैं आई० सी०ए०प्रार० है । इसके माध्यम से बहुत सी स्कीमें चल रही हैं । लैब टु लैंड करके एक स्कीम है जो छोटे किसानों, सीमांत किसानों और खेतिहर मजदूरों के लिए काम कर रही है। किसानों को, छोटे किसानों को, सीमांत किसानों को और मजदूरों को कृषि की आधुनिकतम तकनीक को कैसे प्रयोग करना है, इस के विषय में सिखाया जाता है । आज लैब टु लैंड के माध्यम से मूंग, मूंगफली और फिशरी इत्यादि क्षेत्रों में काफी प्रगति हुई है । यद्यपि भारत में पिछले साल काफी सूखा पड़ा था लेकिन बाद में रबी की फसल, तिलहन, दलहन और गन्ने का रिकार्ड उत्पादन हुआ । यह सरकार और जनता के सहयोग से हुआ है । इस तरह से सरकार जनता की मदद में, जनता की सहायता में कभी पीछे नहीं रही है । किसानों को और खासकर जो आदिवासी किसान हैं उनकी भी काफी मदद सरकार कर रही है। 10 लाख कुओं के निर्माण के लिए व्यवस्था की गयी है । इस तरह से भारत सरकार की उपलब्धियां आज बेमिसाल हैं । फिर यहां विद्युत का संकट बराबर रहता है । लेकिन रूस की मदद से परमाणु शक्ति चलित रिएक्टरों से विद्युत उत्पादन के लिए काम किया गया है । इनसे 4 हजार मेगावाट बिजली मिलेगी । सोवियत टेक्नालाजी के आधार पर बिजली उत्पादन का कार्य होगा । इस तरह से भारत सरकार ने सर्वांगीण विकास के लिए बहुत कुछ काम किया है और बहुत कुछ करने के लिए योजनाएं बना रही हैं । 5 लाख ग्रामों के लिए भारत सरकार ने योजनायें बनायी हैं और ठीक ही कहा गया है कि पंचायतों को आज हमारी सरकार काफी मजबूत बनाना चाहती है। वास्तव में आज जो कार्यान्वयन की समस्या है वह पंचायत के मजबूत नहीं रहने के कारण है । अगर पचायतें मजबूत होती उनको अधिकार मिलते, उनको काम करने के अवसर मिलते तो कार्यान्वयन सही ढग से हो पाता । आज युवकों को भी देश के निर्माण के कामों में भागी बनाने के लिए उनको वोट देने का अधिकार दिया गया है । 18 वर्ष की उम्र वाले जितने भी युवक हैं सबको वोट का अधिकार दिया जायेगा । फिर आज अनेक योजनाएं गांवों के लिए बन रही हैं। ऐसे ही खादी ग्रामोद्योग के कार्यक्रमों को वैज्ञानिक ढग पर किस तरह चलाया जाए, आज वह वैज्ञानिक ढंग पर नहीं चल रहे हैं, लोग अपनी इच्छानुकूल काम करते हैं—तो वैज्ञानिक ढग पर, वैज्ञानिक तरीकों से, वैज्ञानिक प्रयासों से कैसे खादी ग्रामोद्योग का काम हो, इस तरह इसके विकास के लिए आज काम हो रहे हैं ।

इसके साथ ही आज डेयरी का प्रचलन हो गया हैं और यह आज किसानों के लिए वरदान सिद्ध हो रही है। तो डेयरी के विकास के लिए भी प्रयास हो रहे हैं।

आज जो गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोग हैं, उनको आवास की कठिनाई थी, लेकिन इन्दिरा आवास योजना के अन्तर्गत चार लाख घर बने हैं, जिससे आज उन लोगों को रहने की समस्या दूर हो रही है । भविष्य में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन-जातियों के लिए राष्ट्रीय एवं राज्य विकास योजना आवास बनाने के लिए स्थापना की गई है जिससे उनको आर्थिक कठिनाई नहीं हो पाएगी और वह अपनी आर्थिक हालत को ठीक करने में आगे बढ़ेंगे तथा समाज में अपना आर्थिक स्थान रख सकेंगे ।

फिर हमारी सरकार ने नवोदय विद्यालय खोल कर काफी अच्छा काम किया है । अभी 256 नवोदय विद्यालय खोले गये हैं जिनमें 80 प्रतिशत गांव के छात्र हैं और 40 प्रतिशत गरीबी रेखा से नीचे के छात्र उनमें पढ़ते हैं । यह वास्तव में बहुत बड़ी उपलब्धि है । वास्तव में यह गरीबों के विद्यालय हैं । तो इस तरह से हमारी सरकार ने बहुत से काम किये हैं । इन कामों का महामहिम राष्ट्रपति जी के भाषण में जिक्र है और यह सही जिक्र है।

इसलिए हम उनके अभिभाषण के लिए उन्हें बधाई देते हैं और जो इसके लिए धन्यवाद का प्रस्ताव आया है, उसका पुनः समर्थन करते हैं ।

कुमारी सईदा खातून (मध्य प्रदेश) : आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर श्री पशुपति नाथ सुकुल जी ने जो धन्यवाद प्रस्ताव रखा है, मैं उसका समर्थन करती हूं ।

आपने जो इस विषय पर चर्चा करने के लिए मुझे मौका दिया इसके लिए मैं आपकी शुक्रगुजार हूं ।

यह शताब्दी वर्ष भी मनाया जा रहा है । इस वजह देश के प्रथम प्रधान मंत्री की याद भी दोहराना हमारे लिए वाइसे-फक्र है । पंडित जी का यही कहना था कि भारत देश वैसा ही बनेगा जैसे हम हैं, भारत की तस्वीर हमारे विचारों और कर्मों से बनेगी । अगर हमारे विचार विस्तृत हैं, तो भारत भी वैसा ही बनेगा और अगर हमारे सोचने का दायरा सकुचित है, नजरिया तंगदिल है तो भारत भी वैसा ही बनेगा ।

भारत के विकास में हमारे प० जवाहरलाल नेहरू जी ने, लाल बहादुर शास्त्री जी ने, हमारी महान नेता आदरणीय श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने और अब हमारे देश के हरदिल अजीज नेता राजीव गांधी जी ने विस्तृत दृष्टिकोण अपनाया।

हमारा देश धर्म-निरपेक्ष, लोकतांत्रिक शासन वाला देश है और हमारी कांग्रेस पार्टी इस देश का नेतृत्व करने वाली अनुभवी पार्टी है, जिसमें हर धर्म, हर जाति और हर भाषा का सम्मान और सुरक्षा करने की योग्यता है।

जीवन सभी प्राणियों के लिए वरदान है और इस वरदान का सही अर्थ खोजकर दूसरों के जीवन को सुखमय और सुफलित बनाना ही परम पुरुषार्थ है । इस पुरुषार्थ का सही अर्थ हमारे अजीज प्रधान मंत्री, श्री राजीव गांधी जी ने समझा और परम आदरणीय श्रीमती इंदिरा जी के जो बीस सूत्र दिए हैं उन सूत्रों को अधिक अच्छे तरीके से कार्यान्वित करने का काम हमारे ही नेता ने किया । इन सूत्रों में सब से पहला सूत्र गरीबी के प्रति संघर्ष का है और इस देश के करोड़ों गरीब, दलित, पिछड़े, दबे-कुचले लोगों को अपनी योजनाओं से लाभ पहुंचाया । इस पर मुझे एक शेर याद आता है :

अपने लिए तो सब ही जीते हैं इस जहान में,
है जिंदगी का मकसद औरों के काम आना ।

महिलाओं को समानता का अधिकारी और महिलाओं को 30 प्रतिशत रिजर्वेशन देने का प्रयास भी हमारे आदरणीय नेता का ही है । हमने हर क्षेत्र में इन 40 वर्षों में तरक्की की है। शिक्षा के क्षेत्र में हमारे देश में आजादी के बाद केवल 11 यूनिवर्सिटीज थीं और 636 कालेजेज थे, लेकिन अब हमारे देश में 5000 से अधिक कालेजेज हैं और 150 से अधिक यूनिवर्सिटीज हैं ।

कृषि के क्षेत्र में हमने बेहद तरक्की की है । कृषि में पिछले वर्ष सूखा का वर्ष होने पर भी भारत देश के किसी मनुष्य को भूखों नहीं मरना पड़ा ।

[कुमारी सईदा खातून]

हमारे हरदिल अज़ीज़ नेता आदरणीय राजीव जी ने जो पाकिस्तान और चीन के साथ अर्से बाद जो संबंध स्थापित किए हैं वह इस देश के लिए महान शांति की उपलब्धि है । स्वतंत्रता के इन चालीस वर्षों में भारत ने विकास के हर क्षेत्र में प्रगति की नई राह बनाई है । पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सम्पूर्ण साधनों का उपयोग किया गया है । देश को आगे बढ़ाने के साथ-साथ हमने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी साख स्थापित की है । अंग्रेज़ हमें पिछड़ा हुआ भारत सौंप कर गए थे । एक ऐसा देश जहां सुई जैसी छोटी चीज भी हमें आयात करनी पड़ती थी। हमारा आर्थिक ढांचा जर्जर अवस्था में था । स्वतंत्रता मिलने पर हम जी तोड़ कर भारत को सजाने-संवारने में जुट गये । पंडित जवाहर लाल जैसे दूरदर्शी राष्ट्र निर्माताओं की देख-रेख में विकास की मंजिलों को खोजा गया और फिर हम निर्माण की मजबूत नींव रखने लगे । बाधायें आईं मगर रुके नहीं, आर्थिक परेशानियों ने झकझोरा फिर भी झुके नहीं । इस तरह निरन्तर विकास पथ पर बढ़ते रहने का ही फल है कि आज विकास की हर क्यारी उपलब्धि की सुगन्ध से महक रही है, निश्चित रूप से हमें अपनी सफलता पर गर्व है । कभी यह देश पिछड़े देशों की श्रेणी में था । फिर विकासशील देशों की पंक्ति में आया और अब विकसित देश के रूप में उभर रहा है । चार दशकों में भारत ने जो विकास किया वह इस विशाल देश को खुशहाली से भरने के लिए समर्थक होते हुए भी उतना पर्याप्त नहीं कि घर-घर, आंगन-आंगन गरीबी को बुहार सकें फिर भी अपने सीमित साधनों और योजनाओं के क्रियान्वयन में आने वाली बाधाओं के बावजूद जो पाया वह हमारे दृढ़ इरादों और प्रबल आकांक्षाओं का मूर्त रूप है किसी भी विकासशील देश के लिए यह जरूरी है कि वह जनता की गरीबी को दूर करे । उन्हें आगे बढ़ाने के लिए उचित साधन जुटाये । भारत में योजना आयोग के अनुसार सन् 1977-78 में देश में 48 प्रतिशत से भी अधिक लोग गरीबी की रेखा के नीचे थे । इसमें ग्रामीण 31 प्रतिशत और 38 प्रतिशत शहरी थे । 6 वर्षों के कठिन श्रम संघर्ष के बाद इसमें परिवर्तन आया । वर्ष 1983-84 तक 48 प्रतिशत की जगह 37 प्रतिशत लोग ही गरीबी की रेखा के नीचे रह गये । यह प्रतिशत लगातार घटता जा रहा है । देश में हरित क्रांति खेती-बाड़ी में सुधार, अनाज उत्पादन में आत्म-निर्भरता, कुटीर उद्योगों को बढ़ाने में सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर प्रयास आदि के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में जीविकोपार्जन के साधनों में निरन्तर बढ़ोत्तरी हो रही है । फसल का उचित मूल्य मिलने के कारण कृषकों की दशा में सुधार आया है । पूरा प्रयास किया जा रहा है कि रोजगार के अधिक से अधिक अवसर जुटाये जायें । इस वर्ष के बजट में भी बेरोजगारी दूर करने के लिए एक परिवार के एक सदस्य को रोजगार देने का प्रावधान रखा गया है ।

सरकार ने ग्रामीण विकास के लिए छठी योजना में 3600 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है । आज देश का लगभग हर गांव विकास योजना के अन्तर्गत है । सुनियोजित ढंग से विकास कार्य चलता रहे इसके लिए लोगों में राष्ट्रीय चेतना जगाना और व्यावसायिक शिक्षा देना जरूरी है । इसी को ध्यान में रख कर भारत की शिक्षा नीति में परिवर्तन लाया गया है, ताकि शिक्षा व्यवहारिक हो और वह कम से कम समय में युवकों को रोजगार के योग्य बना सके । साथ ही विकास की बड़ी और महत्वपूर्ण योजनाओं के लिए भी देश को प्रशिक्षित युवक मिल सकें । हर युवक देश के किसी भी भाग में राष्ट्र निर्माण में अपना सही योगदान दे सके इसके लिए पूरे देश में एक सी शिक्षा पद्धति की जरूरत है, तभी भारतीयता और राष्ट्रीयता की धारा का मिलाप हो सकेगा । सातवीं योजना में शैक्षिक स्तर में उत्तमता का सृजन, प्रौद्योगिकी और विज्ञान की विभिन्न बाधाओं को समझने की क्षमता तथा विविध व्यावसायिक तकनीकियों के संपूर्ण ज्ञानदेन के लिए शैक्षणिक तंत्र का पुनर्गठन किया जा रहा है, जिससे इक्कीसवीं शताब्दी की चुनौतियों का सामना किया जा सके ।

औद्योगिक विकास में भारत ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है । जहां पहले सुई तक भारत में नहीं बनती थी, अब हर तरह का, घरेलू उपयोग का सामान, उद्योग में काम आने वाली बड़ी मशीनें, खेतों के औजार, इलैक्ट्रोनिक उपकरण, दूरसंचार का सामान, सेना के लिए आधुनिकतम हथियार, रेल के इंजन डिब्बे, हवाई जहाज आदि सभी कुछ हम अपने देश में बनाते हैं ।

यह हमारी प्रगति का ज्वलंत उदाहरण है कि 1951 में लोहा, इस्पात उत्पादन के केवल दो प्लांट थे, किन्तु आज बड़ी क्षमता वाले छह प्लांट चालू हैं । इनकी उत्पादन क्षमता लगभग 89 लाख टन है । इसके फलस्वरूप इंजीनियरिंग सामान के उत्पादन में हमने मांग और पूर्ति का संतुलन कायम कर लिया है । विद्युत उपकरणों और खेती के उपकरणों, ट्रेक्टर और खाद के उत्पादन में भी हम आत्मनिर्भर हो गये हैं । कपड़ा उद्योग में नई नई तकनीकियों का इस्तेमाल कर वस्त्र निर्माण के क्षेत्र में दुनियां में हम अपनी गुणवत्ता और उत्तमता प्राप्त करने में सफल हुए हैं । इसी तरह दवाइयों, मोटर-गाड़ियों, चीनी, सीमेंट विविध उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन में हमने अपने लक्ष्यों को प्राप्त किया है ।

विज्ञान ने हमारी प्रगति को गति दी और नई दिशा दी । प्रगति चाहे उद्योग की हो, खेती या यातायात, दूरसंचार अथवा किसी और क्षेत्र की हो, वैज्ञानिक साधनों के कारण ही हम आगे बढ़ पाए हैं । वैज्ञानिक क्षमता से ही हमने अंतरिक्ष अनुसंधान में प्रगति की है । इन्हीं से सागर तल की खोज की तथा प्राकृतिक साधनों के अधिक से अधिक उपयोग मानव के लिए जुटाए । आजादी से पहले आवागमन के अच्छे साधन नहीं थे और न ही सड़कों का जाल बिछा था । आज मैदानी इलाकों के अतिरिक्त पहाड़ों, जंगलों, सागर तटों, रेगिस्तान इलाकों में कुल मिलाकर लगभग साढ़े पन्द्रह लाख किलोमीटर से अधिक सड़क मार्ग हैं । इनमें 32,115 किलोमीटर लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग और लोक निर्माण विभाग की अपनी सड़कें हैं । इन मार्गों को जोड़ने वाले 450 बड़े सेतु भी हैं।

रेल यातायात में भी हमने यथेष्ठ प्रगति की है । भारत की रेल व्यवस्था एशिया की सबसे बड़ी और विश्व की चौथी बड़ी रेल व्यवस्था है । देश में रेल मार्गों पर प्रतिदिन 11,000 रेल-गाड़ियां चलती हैं । शहरों से लेकर अधिकांश गांव आज किसी न किसी छोर पर इन सड़क या रेल मार्ग से जुड़े हुए हैं ।

वायु यातायात में आशातीत विकास हुआ है । सन् 1953 में पहले-पहल भारत ने विदेशों के लिए एयर-इंडिया और देश में उड़ान के लिए इंडियन एयरलाइन्स की स्थापना की । सन् 1981 में नई विमान-सेवा वायुदूत आरंभ की गई । हवाई अड्डों के आधुनिकीकरण और कम्प्यूटर कार्पोरेशन की स्थापना भी इस क्षेत्र की प्रगति की महत्वपूर्ण कड़ियां हैं ।

हमारा सागर-तटीय क्षेत्र 7000 किलोमीटर लंबा है । भारत का जहाजरानी निगम दुनियां की सबसे बड़ी जहाज लाइनों में से एक है । इन जहाजों के आवागमन के लिए 21 बड़े और 227 छोटे बंदरगाह हैं ।

संचार क्षेत्र में अशातीत प्रगति हुई है । अब अखबार की पुरानी छपाई की जगह टेलीटेक्स्ट ने ले ली हैं । इस प्रणाली से अखबार के समाचार कहीं लिखे जाते हैं और अखबार छपता कहीं है । हमारे देश में अब टेलीफोन भी बनाए जाते हैं, पुशबटन टेलीफोन बनाने का काम भी आरंभ हो गया है ।

समाज के निर्धन वर्गों की सहायता करना, आदिवासियों की प्रगति की नई लहर से जोड़ना, पिछड़े वर्गों का उत्थान करना आदि लोकतंत्र में सरकार के दायित्व हैं । हमारी सरकार ने इस दिशा में सराहनीय काम किया है । देश के विकास में जनसंख्या की समस्या बड़ी समस्या है । स्वतंत्रता के समय जनसंख्या 34 करोड़ थी, किन्तु अब यह 80 करोड़ की सीमा के आस-पास है । सरकार द्वारा जनसंख्या की की वृद्धि रोकने के लिये परिवारों को सीमित करने के लाभों को अनेक प्रचार के माध्यमों से जन-जन तक पहुंचाया जा रहा है । रोगों की रोकथाम के लिये हमारे वैज्ञानिक और डाक्टर नये नये आविष्कार में जुटे हैं और

यही कारण है कि हमारी मृत्यु दर घटी है। सन् 1947 में औसत जीवन 32 वर्ष था जो अब बढ़ कर 58 वर्ष हो गया है। खेलों में भी हम एशिया स्तर तक कई रिकार्ड कायम कर चके हैं। हमने अपनी सेना को आधुनिकतम हथियारों से सज्जित करने के लिये कड़ा परिश्रम किया है। परिणामस्वरूप आज हमारी सेना के तीनों अंग देश की आंतरिक और बाह्य रक्षा करने में क्षमतावान हैं। सचमुच में चार दशकों की प्रगति ने देश को नया जीवन देकर उसे गौरवान्वित किया है।

इन्हीं शब्दों के साथ, महोदय, आपने मुझे बोलने के लिये समय दिया, मैं आपका आभार प्रकट करती हूं और राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर प्रस्तुत धन्यवाद के प्रस्ताव का समर्थन करती हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Mr. Basumatari.

SHRI DHARANIDHAR BASUMATARI (Assam): Thank you very much for giving me this opportunity. *(Interruptions)*

THE V I C E-C H Al R M A N (SHRI JAGESH DESAI): One minute, Mr. Basumatari.

कुमारी सईदा खातून: महोदय, मझे एक मिनट का समय दें। मैं विरोधी भाइयों से निवेदन करना चाहूंगी कि देश की प्रगति में कम से कम उन्हें साथ तो देना चाहिये। इस पर मुझे एक शेर याद आ रहा है। इसमें हमारे विरोधी भाइयो की तरफ इशारा है—

"जब एक कड़ी से वाबस्ता एक और
कड़ी जुड़ जाती है तो
रस्मे मोहब्बत से बन्धकर जंजीर
बड़ी हो जाती है।
मिलजुलकर करें तामीरे वतन की
ऐ दोस्त हम तो इंसां हैं
ये तो दीवार
जाती है।"

†[کماری سعیدہ خاتون (مدھیہ

پردیش) : آدرنیئے اپ سبھا ادھیکش جی - راشٹرپتی جی کے ابھیبھاشن پر شری پشوپتی ناتھ سکل جی نے جو دھنیہواد پرستاو رکھا ہے میں اس کا سمرتھن کرتی ہوں -

آپ نے جو اس وشے پر چرچا کرنے کیلئے مجھے صوقع دیا اسکے لئے میں آپ کی شکر گزار ہوں -

یہ شتابدی ورش بھی منایا جا رہا ہے - اس وجہ سے دیش کے پرتھم پردھان منتری کی یاد بھی دھرانا ہمارے لئے باعث فخر ہے - پنڈت جی کا یہی کہنا تھا کہ بھارت دیش ویسا ہی بنےگا جیسے ہم ہوں- بھارت کی تصویر ہمارے وچاروں اور کرموں سے بنےگی - اگو ہمارے وچار وسکرت ہوں - تو بھارت بھی ویسا ہی بنےگا اور اگر ہمارے سوچنے کا دائرہ تنگ ہے - تو بھارت بھی ویسا ہی بنےگا -

بھارت کے وکاس میں ہمارے پنڈت جواہر لال نہرو جی نے لال بہادر شاستری جی نے ہماری مہان نیتا آدرنیئے شریمتی اندرا گاندھی جی نے اور اب ہمارے دیش کے ہردل وزیز نیتا راجیو گاندھی جی نے وسکرت درشٹی کون اپنایا ہے -

ہمارا دیش دھرم نرپیکش اور لوک تانترک شاسن والا دیش ہے - اور ہماری ہی کانگریس پارٹی اس دیش کا نیتریتر کرنے والی انوٹھی پارٹی ہے - جس میں ہر دھرم اور ہر جاتی اور ہر بھاشا کا سمان اوپر سرکھشا کرنے کی یوگیتا ہے -

†[ ] Transliteration in Arabic script.

[کماری سعیدہ خاتون]

جیون سبھی پرانیوں کیلئے وردان ہے اور اس وردان کا صحیح ارتھ کھوج کر دوسروں کے جیون کو سکھ میٹے اور سپھل بنانا ہمارا پرم پرشارتھ ہے - اس پروشارتھ کا صحیح ارتھ ہمارے عزیز پردھان منتری شری راجیو گاندھی جی نے سمجھا اور پرم آدرنیئے شریمتی اندرا جی کے جو بیس سوتر دیئے ہیں ان سوتروں کو ادھک اچھے طریقے سے کاریانوت کرنے کا کام ہمارے ہی نیتا نے کیا - ان سوتروں میں سب سے پہلا سوتر غریبی کے پرتی سنگھرش کا ہے اور اس دیش کے کروڑوں غریب - دلت - پچھڑے - دبے کچلے لوگوں کو اپنی یوجنا سے لابھ پہنچایا - اس پر مجھے ایک شعر یاد آتا ہے :—

اپنے لئے تو سب ہی جیتے ہیں اس جہان میں
ہے زندگی کا مقصد اوروں کے کام آنا -

مہیلاؤں کو سمانتا کا ادھیکار اور مہیلاؤں کو ۳۰ پرتی شت رزرویشن دینے کا پریاس بھی ہمارے آدرنیئے نیتا کا ہی ہے - ہم نے ہر چھیتر میں ان ۴۰ ورشوں میں ترقی کی ہے - شکشا کے چھیتر میں - ہمارے دیش میں آزادی کے بعد کیول ۱۱ یونیورسٹیز تھیں اور ۶۳۹ کالج تھے - لیکن اب ہمارے دیش میں ۵۰۰۰ سے ادھک کالج ہیں اور ۱۵۰ سے ادھیک یونیورسٹی ہیں -

کرشی کے چھیتر میں ہم نے بےحد ترقی کی ہے - کرشی میں پچھلے ورش سوکھا کا ورش ہونے پر بھی ہم نے بھارت دیش کے کسی منشیہ کو بھوکوں نہیں مرنا پڑا - ہمارے ہر دل عزیز نیتا آدرنیئے راجیو گاندھی جی نے جو پاکستان اور چین کے ساتھ عرصے بعد سمبندھ استھاپت کئے ہیں وہ اس دیش کیلئے مہان شانتی کی اپلبدھی ہے - سوتنترتا کے ان چالیس ورشوں میں بھارت نے وکاس کے ہر چھیتر میں پرگتی کی نئی راہ بنائی ہے - پنچ ورشیئے یوجناؤں کے مادھیم سے نردھارت لکشیوں کو پورا کرنے کیلئے سمپورن سادھنوں کا اپیوگ کیا گیا ہے - دیش کو آگے بڑھانے کے ساتھ ہم نے انتر راشٹریہ ستر پر بھی اپنی ساکھ استھاپت کی ہے - انگریز ہمیں پچھڑا ہوا بھارت سونپ کر گئے تھے - ایک ایسا دیش جہاں سوئی جیسی چھوٹی چیز بھی ہمیں آیات کرنی پڑتی تھی - ہمارا آرتھک ڈھانچہ جرجر اوستھا میں تھا - سوتنترتا ملنے پر ہم جی توڑ کر بھارت کو سجانے اور سنوارنے میں جٹ گئے - پنڈت جواہر لال جیسے دوردرشی راشٹر نرماتاؤں کی دیکھ ریکھ میں وکاس کی منزلوں کو کھوجا گیا - اور پھر ہم نرمان کی مضبوط بنیاد رکھنے لگے - بادھائیں آئیں مگر رکے نہیں - آرتھک پریشانیوں نے جھنجھوڑا پھر بھی جھکے نہیں - اس طرح نرنتر وکاس کے پتھ پر بڑھتے رہنے کا پھل ہے - کہ آج وکاس کی ہر کیاری اپلبدھی کی سگندھ سے مہک رہی ہے - نشچت روپ سے ہمیں اپنی مہانتا پر گرو ہے - کبھی یہ دیش پچھڑے دیشوں کی شرینی میں تھا - پھر وکاس شیل دیشوں کی پنکتی میں آیا اور اب وکسِت دیشوں کے روپ میں ابھر رہا ہے - چار دشکوں میں بھارت نے جو وکاس کیا وہ اس وشال دیش کی

سرکار نے گرامین وکاس کے لئے
چی یوجنا سے میں ۳۶۰۰ کروڑ
روپئے کا پراودھان ہے - آج دیش کا
لگ بھگ ہر گاؤں وکاس یوجنا کے
انتروگت ہے - سنویوجت ڈھنگ سے
وکاس کاریہ چلتا رہے - اسکے لئے
لوگوں میں راشٹریہ چیتنا جگانا اور
ویاوسایک شکشا دینا ضروری ہے -
اس کو دھیان میں رکھکر بھارت کی
شکشا نیتی میں پریورتن لایا گیا
ہے - تاکہ شکشا ویوہارک ہو اور
وہ کم سے کم وقت میں نوجوانوں کو
روزگار کے قابل بنا سکے - ساتھ ہی
وکاس کی بڑی اور مہتو پورن
یوجناؤں کیلئے بھی دیش کو
پرشکشت یووک مل سکیں - کسی
ہر یووک دیش کی کسی بھی بھاگ
میں راشٹر نرمان میں اپنا صحیح
یوگدان دیں سکے - اسکے لئے پورے
دیش میں ایک سی شکشا کی
ضرورت ہے - تبھی بھارتیتا کی اور
راشٹریتا کی دھارا کا ملاپ ہو سکےگا-
ساتویں یوجنا میں شکشک ستر میں
اتمتا کا سرجن - پرودیوگکی اور وگیان
کی وبھن بادھاوں کو سمجھنے کی
چیتنا تتھا وردھ ویاوسایک تکنیکیوں
کے سمپورن گیان دینے کیلئے شکشک
تلنتر کا پنر گٹھن کیا جا رہا ہے -
جس سے اکیسویں شتابدی کی
چنوتیوں کا سامنا کیا جا سکے -

اودھیوگک وکاس میں بھارت نے
ابھوتپورو سپھلتا پراپت کی ہے -
جہاں پہلے سوئی تک بھارت میں
نہیں بنتی تھی اب ہر طرح کا
گھریلو اپیوگ کا سامان - اودھیوگ
میں کام آنے والی بڑی مشینیں
کھیتوں کے اوزار - الیکٹرانک اپکرن
دور سنچار کا سامان سبھی کیلئے

خوش حالی سے بھرنے کیلئے سمرتھک
ہوتے ہوئے بھی اتنا پریاپت نہیں کہ
گھر گھر آنگن آنگن غریبی کو بہار
سکیں - پھر بھی اپنے سیمت
سادھنوں اور یوجناؤں کے کریانوین
میں آنے والی بادھاؤں کے باوجود
جو پایا وہ ہمارے درڑھ ارادوں اور
پربل آنکشاؤں کا مورت روپ ہے-
کسی بھی وکاس شیل دیش کیلئے
یہ ضروری ہے کہ وہ جنتا کی غریبی
کو دور کرے انہیں آگے بڑھانے کیلئے
اُچت سادھن جٹائے - بھارت میں
یوجنا آیوگ کے انوسار سنہ ۱۹۷۷-۷۸ء
میں دیش میں ۴۸ پرتی شت سے
بھی ادھک لوگ غریبی کی ریکھا کے
نیچے تھے - اِس میں گرامین ۳۱
پرتی شت اور ۳۸ پرتی شت شہری تھے
۱۴ برسوں کے کٹھن شرم سنگھرش کے
بعد اِس میں پریورتن آیا - ورش
۱۹۸۳-۵۸ تک ۴۸ پرتی شت کی
جگہہ ۳۷ پرتی شت ہی لوگ ہی
غریبی کی ریکھا کے نیچے رہ گئے - یہ
پرتی شت لگاتار گھٹتا جا رہا ہے -
دیش میں ہرت کرانتی کھیتی پاڑی
میں سدھار - انناج اتپادن میں آتم
نربھرتا - کمزور ادھیوگوں کو بڑھانے
میں سرکاری غیر سرکاری استو پر پریاس
آدی کے کارن گرامین چھیتروں میں
جھوکا اپارجن کے سادھنوں میں نرنتر
بڑھوتری ہو رہی ہے- فصل کا اچت
مولیئے ملنے کے کارن کرشکوں کی دشا
میں سدھار آیا ہے - پورا پریاس
کیا جا رہا ہے کہ روزگار کے ادھک
سے ادھک اوسر جٹائے جائیں - اس
ورشی کے بجٹ میں بھی بے روزگاری
دور کرنے کیلئے ایک پریوار کے ایک
سدسیئے کو روزگار دینے کا پراودھان
رکھا گیا ہے -

[کماری سعیدہ خاتون]

آدھونک تم ہتھیار ریل کے انجن ڈبے - ہوائی جہاز وغیرہ سبھی کچھ اپنے دیش میں بناتے ہیں -

یہ ہماری پرگتی کا جولنت ادھارن ہے - کہ ۱۹۵۱ع میں لوہا اسپات اتپادن کے کیول دو پلانٹ تھے - کنتو آج بڑی چھمتا والے چھ پلانٹ چالو ہیں - انکی اتپادن چھمتا لگ بھگ ۸۹ لاکھ ٹن ہے - اسکے فلسروپ انجینیرنگ سامان کے اتپادن میں ہم نے مانگ اور پورتی کا سنتلن قائم کر لیا ہے - ودیت اپکرنوں اور کھیتی کے اپکرنوں- ٹریکٹر اور کھاد کے اتپادن میں بھی ہم آتم نربھر ہو گئے ہیں- کپڑا ادھیوگ میں نئی نئی تکنیکیوں کا استعمال کر وستر نرمان کے چھیتر میں دنیا میں ہم اپنی گنوتا اور اتمتا پراپت کرنے میں سپھل ہوئے ہیں - اسی طرح دوائیاں موٹر - واہنوں چینی سیمنٹ وودھا اپ بھوگتا وستروں کے اتپادن میں ہم نے اپنے لکشیوں کو پراپت کیا ہے -

وگیان نے ہماری پرگتی کو گتی دی اور نئی دشا دی - پرگتی چاہے ادھیوگ کی ہو - کھیتی یا یاتایات - دورسنچار اتھوا کسی اور چھیتر کی ہو - ویگیانک سادھنوں کے کارن ہی ہم آگے بڑھ پائے ہیں ویگیانک چھمتا سے ہی ہم نے انترکش انوسندھان میں پرگتی کی ہے - انہیں سے ساگر تل کی کھوج کی تتھا پراکرتک سادھنوں کے ادھک سے ادھک اپیوگ مانو کیلئے جٹائے - آزادی سے پہلے آواگمن کے اچھے سادھن نہیں تھے اور نہ ہی سڑکوں کا جال بچھا تھا آج میدانی علاقوں کے اتیرکت پہاڑوں، جنگلوں، ساگروں، ریگستانی علاقوں میں کل ملا کر لگ بھگ ساڑھے پندرہ لاکھ کلو میٹر سے ادھک سڑک مارگ ہیں- انمیں ۳۲،۱۱۵ کلومیٹر لمبا راشٹریہ راج مارگ اور لوک نرمان وبھاگ کی اپنی سڑکیں ہیں - ان مارگوں کو جوڑنے والے ۳۵۰ بڑے سیتو بھی ہیں -

ریل یاتایات میں بھی ہم نے پرشنشنیہ پرگتی کی ہے - بھارت کو ریل ویوستھا ایشیا کی سب سے بڑی اور وشو کی چوتھی بڑی ریل ویوستھا ہے - دیش میں ریل مارگوں پر پرتی دن ۱۱۰۰۰ ریل گاڑیاں چلتی ہیں - شہروں سے لیکر ادھیکانش گاؤں آج کسی نہ کسی چھور پر سڑک یا ریل مارگ سے جڑے ہوئے ہیں -

وایو یاتایات میں آشاتیت وکاس ہوا ہے - سنہ ۱۹۵۳ع میں پہلے پہل بھارت نے ودیشوں کیلئے ایر انڈیا اور دیش میں اڑان کیلئے انڈین ایر لائینس کی استھاپنا کی- سنہ ۱۹۸۱ع میں نئی ومان سیوا وایو دوت آرمبھ کی گئی - ہوائی اڈوں کے آدھونکیکرن اور کمپیوٹر کارپوریشن کی استھاپنا بھی اس چھیتر کی پرگتی میں مہتوپورن کڑیاں ہیں -

ہمارا ساگر تٹیئے چھیتر ۷۰۰۰ کلو میٹر لمبا ہے - بھارت کا جہاز رانی نگم دنیا کی سب سے بڑی جہاز لائنوں میں سے ایک ہے - ان جہازوں کے آواگمن کیلئے ۱۱ بڑے اور ۲۲۷ چھوٹے بندرگاہ ہیں -

سنچار چھیتر میں آشاتیت پرگتی ہوئی ہے - اب اخبار کی پرانی چھپائی کی جگہ ٹیلی ٹیکسٹ نے لے لی ہے - اس پرنالی سے اخبار کے سماچار کہیں لکھے جاتے

ہیں اور اخبار چھوٹا کہیں ہے -
ہمارے دیش میں اب ٹیلیفون بھی
بنائے جاتے ہیں پھر بٹن ٹیلیفون
بنانے کے کام بھی آرمبھ ہو گیا ہے -

سماج کے نردھن ورگوں کی
سہائیتا کرنا - آدی واسیوں کو
پرگتی کی نئی لہر سے جوڑنا پچھڑے
ورگوں کا اتھان کرنا آدی ایک تاکر
میں سرکار کے دائرے ہیں - ہماری
سرکار نے اس دشا میں سراہنیئے کام
کیا ہے - دیش کے وکاس میں
جن سنکھیا کی سمسیا بڑی سمسیا
ہے - سوتنترتا کے وقت آبادی
۳۴ کروڑ تھی - لیکن اب یہ ۸۰ کروڑ
کی سیما کے آس پاس ہے - سرکار دوارا
آبادی کی بڑھوتری کو روکنے کیلئے
پریواروں کو سیمت کرنے کے ابھیان
کو انیک پرچار مادھیموں سے جن
جن تک پہنچایا جا رہا ہے -
روگوں کی روک تھام کیلئے ہمارے
ویگیانک اور ڈاکٹر نئے نئے آوشکار
میں جٹے ہیں اور یہی کارن ہے کہ
ہماری مرتیو در گھٹی ہے - سنہ
۱۹۴۷ء میں اوسط جیون ۳۲ ورش
تھا - جو اب بڑھکر ۵۸ ورش ہو
گیا ہے - کھیلوں میں بھی ہم ایشیا
استر تک کئی ریکارڈ قائم کر چکے
ہیں - ہم نے اپنی سینا کو آدھونک
ہتھیاروں سے سسجت کرنے کیلئے
کڑا پریشرم کیا ہے - پرینام سوروپ آج
ہماری سینا کے تینوں انگ دیش
کی آنترک اور باہری رکشا کرنے میں
کشمتاوان ہیں - سچ مچ میں چار
دشکوں کی پرگتی نے دیش کو نیا
جیون دیکر اسے گورونوت کیا ہے -

انہیں شبدوں کے ساتھ مہودے -
آپ نے مجھے بولنے کے لئے وقت دیا
میں آپ کا آبھار پرکٹ کرتی ہوں -
اور راشٹرپتی جی کے ابھیبھاشن پر
پرستت دھنیہ واد کے پرستاؤ کا
سمرتھن کرتی ہوں -

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Mr. Basumatari.

SHRI DHARNIDHAR BASUMATARI (Ass?m) : Thank you very much for giving me this opportunity. *(Interruptions).*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI) : One minute, Mr. Basumatari.

کماری سعیدہ خاتون : مہودے -
مجھے ایک منٹ کا وقت دیں -
میں ورودھی بھائیوں سے نویدن کرنا
چاہونگی کہ دیش کی پرگتی میں
کم سے کم انہیں ساتھ تو دینا چاہئے -
اس پر مجھے ایک شعر یاد آ رہا
ہے - اسمیں ہماری ورودھی بھائیوں
کی طرف اشارہ ہے —

جس ایک کڑی سے وابستہ اور کڑی
جڑی جاتی ہے تو
ہم محبت سے بندھکر زنجیر بڑی ہو
جاتی ہے -

مل جل کر کریں تعمیر وطن کہ لے
درست ہم تو انساں ہیں -

پتھر کر جڑ جائے تو دیوار کھڑی ہو
جاتی ہے -]

THE VICE-CHAIRMAN (SHRl JAGESH DESAI) : Mr. Basumatari;

SHRl DHARANIDHAR BASUMATARI : Mr. Vice-Chairmati, Sir, I rise to support the motion moved by my hon. friend, Mr. Sukul. He has mentioned the developments that we have had in India. We are celebrating the Birth-Centenary of our late Prime Minister, Jawaharlal Nehru, who was the architect of modern India. He developed our country in a very big way. I have had the privilege of meeting Nehruji many times and got encouraged by him. Once, when we could not move the re-

[Shri Dharanidhar Basumatri]

servation issue in the Constituent Assembly, I went to him. He asked me to go to Bapuji for advice. I accordingly went to Bapuji When I went to him, he looked at me for some time. Then he asked me, "Did you meet me somewhere earlier?". I said, "Yes, Sir. In 1926 I had the privilege of meeting you when I was a student in sixth class. You asked me, "what is your aim in life?". I replied, "I want to become a politician and serve the country." You said, "Then my blessings are with you. I am so proud of you." After I recollected this incident, he enquired why I had come. I narrated the problem. Then he handed over a small slip to me and said, "Unless reservation is made for these weaker sections, I shall go on fast." With that slip, I went to meet the Prime Minister, Mr. Nehru, at Teen Murti Bhavan. He asked me to go to Sardar Patel. On the following day, I met Sardar Patel in the morning. He asked me whether Nehru sent me. I told him how I was there. What happened later is history.

I am also reminded of another experience I had. In 1964, I had the privilege of joining the Prime Minister to England. At that time, our great leader, Mrs. Gandhi, was the Information and Broadcasting Minister. A lady was the Deputy Prime Minister of the U.K. We all sat together to discuss. Many questons were asked by that Deputy Prime Minister as to what India was. We had to reply . When she was tired, she was just relinquishing her duties. She aid, "I am quite new in Parliament. You had better ask Mr. Basumatari, my friend, sitting here; he has been there in Parliament for a long time." Then that Deputy Minister asked me, "Mr. Basumatari, could you tell me what the per capita income is in India?" In very strong words I replied, "Madam, it is a very, very delicate question that you have asked me. Where is any per capita income in India? You ruled India for 150 years and when you left, there was only 3 per cent literacy and the per capita was only two annas!" Then their Prime Minister got excited and said to her, "Why did you ask such a question? We sucked the blood of India and you are asking what the percentage of literacy and per capita is in India!"

A moment later Mrs. Indira Gandhi turned to me and told me in Hindi.

"बसुमतारी जी, आपने अच्छा किया। हम बोलना चाहते तो भी नहीं बोल पाते।"

Now, that India we have developed in various ways. We know now how India has developed in the field of science and technology. My friend, Mr. Narayanan, is there. He knows me very well. We have developed our country like anything. In science and technology, I am told, we are 5th . Among industrial nations we are 8th. In literacy this year we have been able to come up to 40%. But as far as Scheduled Castes and Scheduled Tribes are concerned, you will be surprised to know that we have not yet attained the expected standards. The literacy percentage among Scheduled Castes is only 14 and it is even less in Scheduled Tribes, just 8. Therefore, we have yet not been able to bring up the Scheduled Castes and Scheduled Tribes to level of others. My request to the Government, through you, is we must be very sincere in realising the dreams of Mahatma Gandhi. what Mahatma Gandhi desired for India. Mahatma Gandhi believed that unless and until Scheduled Castes and Scheduled Tribes were brought up to the same level as that of other communities, India could not be developed. If one finger is lame, we cannot write, we cannot work. Similar is the case with Scheduled Castes and Scheduled Tribes. All the communities must develop together and equally. I want to make my point in detail. There are certain reservations for Scheduled Castes

and Scheduled Tribes in all matters, in all spheres. But when applications are submitted by the Scheduled Caste and Scheduled Tribe boys, they are refused. I want to cite one example in regard to allotment of a petrol pump. I am sorry the Minister of Petroleum is not there. Two years ago an unemployed graduate had applied for allotment of a petrol pump from out of the reserved quota. The applicant happened to be my grand son. When I took the applicant to the Minister, he said, *ho jaiga*. it was not done. I took the applicant to the Minister to a second time. Again he said, *ho jaiga*. A third time I went to him and he repeated, *ho jaiga*. But I have so far not received any letter of acceptance. The excuse given is the boy is not coming from that and that area. But there are many applicants from Marwar, Gujarat, who go there and get petrol pumps without any problem. When the question of Scheduled Castes and Scheduled Tribes comes, all kinds of objections are raised and their applications are refused. Therefore, what I want to emphasise is until and unless this bureaucratic type of attitude is changed, the system of reservations cannot work successfully and the Scheduled Castes and Scheduled Tribes will not get justice and their lot will not be improved. What is the Central Minister doing about it ? Pious wishes of the Government are there. Pious wishes of the Minister are there. But their pious wishes alone cannot help in the upliftment of the Scheduled Castes and Scheduled Tribes unless they are equally supported by the bureaucracy. I have seen it in my own life and this is my own experience.

THE VICE-CHAIRMAN SHRI JAGESH DESAI): It depends upon the Minister.

SHRI DHARANINDHAR BASUMATARI: Pardon, Sir ?

THE VICE-CHAIRMAN : (SHRI JAGESH DESAI) : said that it depends upon the Minister.

SHRI DHARANIDHAR BASUMATARI: Yes. Now Sir, I would like to tell one thing. I myself come from an area whee, when we got Independence, there were not many roads, there was no school and there was no dispensary. But now things have changed. Take the areas where the Bodos are fighting. Why are the Bods fighting? These young Ministers of Assam do no understand what to do and what not to do. Even when there is the reservation provision, they are not appointing the Scheduled Caste and the Scheduled Tribe people. If there is some reservation for them in some field, they are not doing anything at all. They do not even understand what is what. Now, in these areas, there are tribal people who are called Plains Tribals consisting of five communities, such as the Bodos, Mihirs, Rabas, etc. They are all scattered. But there are some areas where they are a little concentrated and in those areas where they are concentrated, Congress Government constituted Tribal belt and Blocks. It is all backward and they are to be protected from exploitation from the other sides. People from other sides exploit them and when they are exploited like anything, when they are exploited economicaly and socially and in different ways, they are naturally forced to fight for their existence and so, they are fighting. Now, our Home Minister, that is, the Home Minister of our State, Mr. Bhrighu Kumar Poolan, is reported to have called them anti-national. But we are in the indigenous people. we are the original people. It is we who have been in Assam for years and years and those who came to be known as Assamese are all those who were recruited by us when we ruled and then we were subjugated by Ahom who ruled more than six hundred years. They are from outside and they also recruited, they themselves claim, " We are from U.P.

[Shri Dharanidhar Basumatari]

we are from Maharasthra", and Kanons etc. These people, as they advanced in life, got power in their hands in agitations for 6 years and they do not know and they do not understand what is what. In their opinion, in their definition there are only two or three communities who are Assamese. They think that only the Brahmins the Kaya-sthas, eve. are the Assamese and these are the communities who are claimed to be Assamese- But what is their percentage? It is only 22 per cent. They constitute only 22 per cent. This is not my calculation and this is not my estimate. This is the assessment according to a "Times of India" survey. This is not my own estimate. In this way, Sir, we have been expoloited like anything. Now, Sir, I come to certain other things.

At the time we got Independence, we could not even go by train and we could not go by anything whereas now we are having the flights of Indian Airlines. Who did it? The Congress Government did it. In the field o'f science and technology also we have developed very much. We can compare our-selves with others, with all the other developed countries. Sir, I have had the privilege of visiting many developed and developing countries except China. I got the privilege through great leader Nehru and through Shrimati Gandhi and Shri Shastri jee. I had been to many places many times and I had that privilege.

Sir, I also had the opportunity of seeing the Bandung Conference taking place. It was in a very big hall. 1 had been there. I have seen all the three people, Pandit Nehru Shrimati Indira Gandhi and now h'r son, the youthful and dynamic Prime Minister our Rajiv Gandhi. I know him since 7 years of age.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRl JAGESH DESAI): Please conclude.

SHRI DHARANIDHAR BASUMATARI: 1 know him when he *y/n* seven years of age. This young man, this dynamic youth, this Prime Minister, has done many things nobody can do.

The boycott by the Opposition is not called for. They have no point when our Budget is progies-sive. Every detail has been given. There is nothing to criticize.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Please conclude now.

SHRI DHARN1DHAR BASUMATARI: I am rorry. You are controlling my time. I had to say something more.

Sir, you cannot imgine. You yourself are a leader of State. Our young Prime Minister has done so many things in such a short period of time. We are proud of our Prime Minister.

The other day when Advaniji came, I asked him aftei a few days: Advanj, how do you find our Prime Minister? He said:

"अरे मानना ही पड़ेगा बड़ा तेज है।"
और अब यह बोलते नहीं हैं।

When Mr. Vajpayee came, I em-biaced him in this House and after a month I

"सोबर हैं । परम्परा है।"

इतना कुछ जानते हुये भी

criticize him. In my opinion, our Prime Minister is a wonderful man. You cannot imagine. It is only 'parampara'. If there were no 'parampara' he could not do it.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Now, please conclude.

SHRI DHARANIDHAR BASUMATARI: He has been to China with whom we have hed no relations for the past 34 years. But

he was welcomed by their great leader Ding Ping heartily. He was told: We mei your grandfather, we met your mummy and now we meet you, it is such a pleasant. They have got an emotional liking for the family. Sir, we are proud to have such a Prime Minister.

Sir, I was also very proud when he went to Pakistan and met the young Lady Prime Minister there who converted dictatorship into democracy. Mrs. Bhutto also—not in a political way but in a family way— said: we are very close, and we will follow the Simla Agreement. Everybody knows this. I will not s ay anything more about it. She said that she will follow the spririt of the Simla Agreement, which was entered into by Mrs. Gandhi ail her father. Therfore, Sir, our country ingoing to be very prospeiious. And these Opposition parties, though they have appointed some National Front, they aie quarelling among them e'ves and they cannot see eye to eye with each other these day. Then you can imagine, Sir, how these Opposition parties can replace us. They replaced us only for two and a half years. At that time, the Opposition Government was represented by a galaxy of people, by national leaders. But those national leaders remained in power only for two and a half years.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Now please conclude.

SHRI DHARANIDHAR BASUMATARI: Sir, I may tell you that we are not lagging behind in coming up. We are competing with other countries. We are going to be prosperous. There is one thing, Sir. unless you get the bureaucrats' full co-operation, you cannot develop. Sardar Patel told me once. Sir, I was a small man. But he used to like me as a son. He said, "Basumatari, compared to other ICS people, our young ICS are very sincere; they aie helpful." Sir, the same thing was told to me by Jawaharlal Nehru also. Therefore, I request our Minister to keep the confidence of the bureaucrats. Unless you move nearer to the hearts of the bureaucrats, you cannot get the work done by them. Then, Sir, unless the bureaucrats removed their reservation mentality towards the Scheduled Castes and Scheduled Tribes, we cannot develop. That is a fact. Sir, I have been discussing yesterday and today with some Secretaries on som; appointments as instruct ,d by the Prime Ministers office. There I told tnat "you must respect the Prims Minister heart to heart. And unless you respect, we cannot strengthen the shoulders of the Prime Minister. I am telling this with my own experience for so many ye^rs in the Parliament."

THE VICE-CHAIRM\N (SHRI JAGESH DESAI): Please conclude now.

SHRI DHARANIDHAR BASUMATARI : Thank you, Sir I am vary happy that you have given me the time to speak. I thank you very much.

SHRI BASUDEB MOHAPATRA (Orissa) : Sir, I rise to support the Motion of thanks moved by the hon. Member, Shri P.N. Sukul and seconded by the hon. Member Shri D.P. Ray. Sir, I am very thankful to you for giving me this opportunity to take part in the discussion.

[The Deputy Chairman in the chair]

Madam, the hon. President has given a clear picture of the achievements of the Government in the past and spe't out the future programme very analytically. This year is also the year of the Birth Centenary of Jawaharlal Nehru, the maker of modern India and. the first Prime Minister of this country Shri Jawaharlal Nehru was a politt. cal successor of Mahatma Gandhi,

[Shri Basudeb Mohapatra]

the Father of the Nation. Gandhiji relied upon him during the freedom movement and trusted him also. Jawaharlal Nehru's vision of socialism, democracy, non-alignment and secularism are very clear which have been followed by Indiraji. Th epresent Prime Minister, Shri Rajiv Gandhi, is following the same path to make the country stronger. The hon. Presi dent has correctly mentioned that Jawaharlal Nehru had erected the pillars of modern natioanhood, that is democracy, secularism, socialism and non-alignment. He is being remembe red by the present generation 5 P.M. as he laid the foundation of planning and non-alignment for the country's progress. Out rela tions with the neighbouring countries, Pakistan, Bangladesh, Nepal and Sri Lanka have also improved. Our Prime Minister visited China after 35 years and his visit was very success ful and this has opened a new chapter in our ielations with that country. The initiative taken by our Prime Minister is highly commendable. The Prime Minister has alo started talks with the Prime Minister of Pakistan and both the countries have now come closer to each other. This has reduced the tension between the two court tries which would bene fit both the countries. This is no doubt a very rhicement.

Madam, our foreign policy a such that nobody can challenge. Our relations with Russia and America are good they are contin-ously strengthening and the ctedit for this goes to our young and dynamic Prime Minister. In Maldives and and Sri Lanka our peace-keeping forces have done an excellent job. Our peace-keeping forces in Sri Lanka have done a commendable job despite various hurdles and it is because of our peace-keeping forces that elections have been held in Sri Lanka and the Government has been established in that country.

Madam, the opposition parties were raising a hue and cry about the success of our accords. Aftet Independence only during the tenure of Shri Rajiv Gandhi accords have been signed with the aim to minimise the tensions. The President has said very categorically that the democratic path of dialogue and discussion and conciliation and consessus is open to all those who slum vio lence and work within the framework of the Constitution. This was demonstrated in the case of the Assam Accord in 1985, Mizoram Accord in 1986 and Tripura and Darjeeling Accord in 1988.

Madam, I want to deal with the case of Mizoram about which ,some days back you might have seen in the newspapers that Laldenga has made allegations against our Prime Minister and against the Congress Party. The position was precarious for the last 20 years. Due to insurgency innocent people including Adi-vasis were kil led in large numbers. The sitution was out of control. After the accord elections were held and we Congress people lost the elections and Laldenga became the Chief Minister. We watched his performance but due to infighting in his party he was not able to control his party members. Therefore President's rule was promulgated and later elections were held. He lost the election to get the majority. Now the Congress Government is in power in Mizoram. This shows how democracy is working in country. We Congressmen have no narrow outlook. We do not believe in parachia'ism. Now the people have realised that the Congress party is for national integration.

Madam, now another question arises and that is of Bodo students' union. They have launched a campaign for a separate State for which the Assam Government is very much worried. The Central Government is not in favour of creating a separate State as announced on several occasions. But the problem" can be resolved only by the Central Government and the Prime Minister,

Shri Rajiv Gandhi. I hope the Assam Government would seek the help of the Prime Minister to resolve this issue.

Madam, I would like to mention some nore points and firstlv I would like to deal with education. I must also mention that one of the most important things that happened during the last four years is the new education policy. Due to Prime Minister, Shri Rajiv Gandhi's commitment before the last elections, the new education policy has been chalked out. It was the Father of the Nation who said that India should bb a classics society, a socialistic republic where every citizen has equal rights to rise up to his capacity and capability. The concept of Navodaya Schools in the nev, education policy is one such factor. It gives chance to every child, born in any corner of the country. Those who have no mean', thos e who are living below poverty line, have an opportunity to j end their children to these schools. Our hon. President mentioned clearly that 256 Navodaya Vidyalayas have been established; 40 per cent of the children studying in these schools are from families living below poverty line, and almost 80 per cent of the students are from rural areas. My suggestion is that since the concept of Navodaya Vidyalaya has been successful in all parts of the countiy, more such schools may be established, specially in rural areas.

With regard to housing, hon . President has mentioned that priority has been given to promoting shel ters for the Schedule ;s, the Scheduled Tribes and for the bonded labour. No doubi, this is a well-come step. National Housing Bank has been established. The Govern ment has taken every step to provide housing facilities to these classes. Still, large number of poor families are lagging beh'nd in this matter in rural areas. Problem of urban areas is also the same. Indira Awas Yojina for construction of low-cost houses for the poorest of the poor, is under implementation since 1985-86. During the Seventh Five-Year Plan, a target was fixed to construct one million houses under this scheme. The beneficiaries of this scheme are happy with it. More housew are to be constructed under this scheme and funds are to be allocated to the States for this purpose. I suggest that physically-handicapped person: must also be included under the scheme.

Unemployment is the biggest problem in India today. The number of educated unemployed is increasing year after year. Our Government is conscious of it. A resolution was passed to this effect by the All India Congress Committee in its Bombay session last year. Our Prime Minis-ter, Shri Rajiv Gandhi, has given a clarion call of 'Bekari hatao' for which the Government is taking various steps to create employment opportunities in different fields.

Voting age has been reduced to 18 years. This is a great achievemeint of our party after 40 years of our independence. Opposition parties have claimed that this has been done due to their demand from time to time. But this is not at all correct. Only the Congress Party and its frontal organisations like NSUI and Youth Congress have been voicing a demand for reducing voting age. The AICC after deliberations in various s-emi-nais and conferences passed a leso-nution calling upon th/ Government to implement it. Only then, an amendment of the constitution lowering the voting age was brought about. Our Prime-Minister has taken a historic decision n lowering the voting age.

Economic growth of the country in the last four years has been impressive despite drought and floods. The economy recorded a positive growth rate of 3.6 per cent which is higher than the average growth rate. The hon- President highlighted

, [Shri Bashudeb Mohapatra]

the outstanding performance in the production of foodgrains, cotton, sugarcane and oilseeds. Overall, the industrial growth rate has exceeded 8 per cent per annum. Industrialisation plays an important role in correcting regional imbalances and accelerating industrial growth. In order to remove regional inequalities and encourage industrial growth of different regions, the Government haf taken a number of measure?! by giving various incc ntives and subsidy to industries set up in backward districts and in no-industry districts. At present three hundred districts have been identified as backward districts. Special attention should be paid to remove backwardness of these districts.

Last year out country faced the worst drought. Our Prime Minister had taken bold steps to meet the challenge. For the first time, he constituted a Cabinet Sub-Committee to review the drought situation. He toured various parts of the country affected by drought and released the required amount to the States. The other day I raiseo the i[r]sue through a special mention regarding the condition of 4007 villages affected by the drought in Orissa. I hope the Government will seriously consider the matter and release the amount to meet the situation.

Our Prime Minister has already declared that the Government is considering measures to strengthen democracy at the grassroot level. Power has to be delegated to the people at the lowest level. The Prime Minister has also said that merely setting-up of industries or constructing dams, canals, etc. would not help in development. There should be more participation of the people in a democratic process. It is for this reason that the Government is keen to evolve and strengthen the panchayati raj system.

Lastly, Madam, I want to lefer to the activities of our opposition parties. They are not giving any constructive suggestions to the Government. They are opposing the Government only for opposition sake. They are not uni^d and think they will not be uni^d in future also. Ev ryday we see the newspaper, we find that one opposition party is alleging against another opposition party. They are quarrelling in such a way that they will never get united in future.

Thanking you.

SHRI KAPIL VERMA (Uttar Pradesh) : Thank you very much, Madam, for allowing me to speak on this Motion of Thanks, which I rise to support. I particularly commend the great success achieved by our Prime Minis ter in the international field. We ail know the heiculan efforts made by him not only in persuing world disarmament programme and a ban on nuclear weapons all over the world but also in normalising relations with Pakistan and China, our two immediate neighbours. It was a very good step indeed that he has tried his best to do something in this direction. We in this House and the Members in the other House also welcomed the return to civilian rule, to democracy, in Pakistan after 12 years oi military rule under Zia. We know that our P.M. met Ms. Benazir Bhutto and the effort made by him in trying to normalise relation between the two countries are teally commendable. We are, of course, very much conscious of the fact that we should not expect miracles from Mrs. Benazir Bhutto. She is after all under the pressure of army. That is one factor and without the help of the army she cannot continue as Prime Minister of Pakistan. So, she has to do many things under pressure. Secondly, the President has all the powers under the Pakistan Constitution. It is he who got Sahebzada Yakub Khan appointed as Foreign Minister and we know that Sahebzada Yakub Khan sPeak$_c$

in a voice which appears to us to be different from that of Ms. Benazir Bhutto. We must remember at the same time that Pakistan is only a policeman of the United States in this part of the World. Alter Shah of Iran's departure from the scene Pakistan has assumed that role. This is why America has turned a Nelson's eye, or closed her eye; to what Pakistan has been doing to develop an atom bomb and U.S. has been giving military aid to Pakistan in contravention of US's own laws. Only the other day, we read in the papers about Pak Ambassador Jamsbed Markf r's explicit admission on U.S. television that Pakistan has got the capacity to develop a bomb. Madam, we all knew it before hand. This is only a confirmation of what was happening earlier, what the newspaper reports have been Saying or even the American intelligence reports have been saying and what the *Newsweek* has been saying, or what other papers like the *Time* magazine have been saying not to speak about the Washington Post or the Jane's defence. We all know that Pakistan ha:- been stealing technical know-how, nuclear know-how from other countries and! making its own bomb. The Washington Post said it two years ago that they are only a turn-of-the-screw away from the bomb. Now we have read in the newspapers, what Pak Ambassador has said but I will not go into it at length because time is short. We know it very well that for the last ten years, they have been importing irom Germany some very very important, sensitive equipment and other things needed for the bomb, particularly the purification plant. The most dangerous thing is that they have got tritium, an isotope of hydrogen. Madam, as a scientist you know the implications oi that. Atom is used only as a trigger in making a hydrogen bomb and with this new element which they have got from West Germany, Pakistan can make a hydrogen bomb. So I would like the Prime Minister and the Government to tell us really whether they >have achieved the capacity to make a hydrogen bomb because they have made advances „„' certain other fields. They have in fact, developed a delivery system. You, Madam as a scientist can very well understand significance of the fact which we, $l_{avmen)\ caa}$. not understand, that they have developed a missile. The renorts are that they have unvei'ed not one but three missiles. One rocket can go up to 650 kilometres. Other reports say that it is China which has supplied a nuclear warhead for the missile through Saudi Arabia. Now they have all these three things. Therefore, I would like the Government to take certain steps in this Jam-shed Marker has said on the television that Pakistan is "exercising its opt.on" .Therefore, time ha! pome for India also to exercise her option. It has been my confirmed opinion which I have been voicing— I am not speaking on behalf of my party, I am speaking as a private Indian citizen^that India must exercise its option, particularly in view of what is happening in Pakistan now. We cannot forget the fact that it was Benazir's father Zulfiqar Ah Bhutto, who fir^t talked of an Islamic bomb and when Madam Gandhi had an implosion *"t* ^{1974}\ will produce thebomt)". And Benazir BhuttOj

even aiter becoming the Prime Minister, complained to her nation that but for Zia, they would have got the bomb long ago. And we have read in the newspapers that she it negotiating with China. In fact, Dr. I.Q. Khan, the fathei of the Pakistan bomb, went there and it is said that the Lop Nor desert in China would be used for the Pakistan bomb test. In any case, we should be prepared for a hydrogen bomb from Pakistan. But I do not want to embarrass the Government by asking what they are doing in the matter— they must be doing something. We hope the Government is fully prepared and, in any cse, we should exercise our

[Shri Kapil Verma]

option. This has been my confirmed opinion.

My second demand is this : Our Agni missile is ready, and Akash and Prithvi also are ready. But we have been postponing the Agni test. There is a lobby which is exerting pressure on us not to undertake the test. But I think we should undertake the test, particularly in view of what is happening in the neighbourhood.

Madam, even after saying all this, I am still of the opinion that Benazir Bhutto is the best bet for us. This is so because her alternative the fundamentalist? would be worse. We wish Pakistan succes". We wish Benazir Bhutto success. In any case, as I said, she is not free agent. We hope oui relations would impiove. The other day our Foreign Minister appealed to the House and to the nation to bear with the Government and wait for the resu It of the dialogue with Pakistan. We wish them all success and, despite all our doubts, we hope that the Pakistan military would see reason. She has sacked 40 of the senior military officers—of course with the Pakistan Commander-in-Chiefs' approval. We think it is a good sign. We sincerely want Pakistan to prosper, we sincerely want good relations with them, we sincerely want our relation to be noimalized —because w<. de not want our hard-earned money to be spent on Defence but on economic, developments. As the budget show, in fact, the Defence budget has been cut.

I also welcome thf Prime Minister'^ talks with the Chinese leaders. That has lessened tensions. China is ? big and a very powerful neighbour and friendship with them is welcome. They say they are vitally interested in having peace on the border. This is because they want, in their own interests, time and breathing space for thier own development and for thier own modernizations. So they do not want wars. One welcome sign of it is, when Benazir Bhutto—-much against her harping on the Simla Agreement and solving all the pioblems under the Simla Agreement, including Kashmir—mentioned about the Kashmir issue to the Chinese Prime Minister and other Chinese leaders in Beijing during her visit, they said, "please settle it amongst yourselves bilaterally." I very much welcome this statement because, Madam, as a foreign e xpert you must have noticed that this was tbe stand China had taken before attacking us in 1962. Now they have gone back to that stand. So w e very much welcome that stand and we hope they will keep it up. We also hope that the gesture shown by our Prime Minister in talking Tibet would be appreciated. While repeating those phrases, probably the Opposition has forgotten all that had happened 20 years ago. Even Jawaharlal Nehru, our great Prime Minister and our great leader, the founder and architect of our foreign policy, said in 1956 that Tibet was an autonomous region of China. Our Prime Minister has only repeated it. But in exchange of that, Cb ina also should have shown some of goodwill and gesture towards us about eastern border. But they did not show it. We hope they will see reason on the border issue. We want the leve' of the border talfo to be upgraded. There need not be very great hurry about it. Because of the emotional issue involved on both tides, an easy solution is not possible and we cannot give away the land, particularity because of the old resolution of Parliami nt, because the elections aie near and because of so many other things. We are prepared for a dialogue with China for a solution of this grave problem, but China must understand our difficulties. We want good relations with them but not at the cost of our people, not at the cost of our land, not at the cost of the

security oi our country. So, it is very clear that w want good relations with them and particularly at a time when even the USSR is trying to improve its relations with China, is trying to solve its problems with China, is trying to solve its land-dis-pu:a, border dispute with China.

Russia is an old time-tested friend of ours. It has heled us every time we needed it. Madam, you know them very well, you know the leaders ^rsonahy, particularly the President's wife. You know how they are interested in helping us in building 0 ountry. They have opened a new chapter in history and the pre sent President would go down in history as a great pioneer with his *troik^*, his openn ss, *glasnot-* 1 had an occasion tovisittheSovietUrion recently and I have seenwithmy own eye what is happening there.A new life, a new turn, they are tak ing. I hope that the control of the nunist Party is also lessening.

I hope :he great freindship that the USA and the USSR are trying to s trike between them will do a lot of good to the world because if their ten =.ion are reduced, s m a 11 countries which are afraid of themselves oi which try to blackmail big countries like us, will live in peace.

Take, for example, Nepal. They were like brother till the other day. Bui, after our quarrel with Pakistan and China, they started blackmai[1]-ing us, if you excuse me for using that word. They have put 500 trucks of arms, big arms irom China. They have put them on our borders. The) have put even anti-aircraft guns on our borders. May I a k why they need anli-aircrait guns directed towards India? It. India going to attack them? From which side? From the Terai, Gorakhpur area, Lakhimpur area? Do you think that our planes are going to bomb them? Why have they invited China to our borders? They have put telegraph poles, and all kinds of other things are happening.

I wil not take more of your time

In Sri Lanka our army has done wondenully we'l. The IPC has made sacrifices, and the country is justly proud oi it. Our policy has succeeded there. The criticism made by the Opposition against that policy is highly misplaced. The Sri Lanka election have shewn that the Taroi pcpublion there is for peace and tranqui'ity. I hepe the army will come back soon and that our problems in Sri Lanka will be solved. While talking of Sri Lanka, the Opposition conveniently forgets the fact that had the Indian army not gone there, some other foreign powers would have gone there. You know what they are doing there. You know what is happening at Trincomalee. You know what foreign bases are there You know what foreign powers are there. Some oi them are still there.

Our Indian Ocean is full oi naval arround warships some oi them hostile. Our Prime Minister as justly expressed great concern over the lact that there is naval presence of certain big powers.

The other day, Mr. Yakub Khan has spoken about the prefence of an Indian nuclear submarines, in the Indian Ocean. But there are so many submarines, nuclear submarines of foreign powers. The whole American fleet which is nuclear, nuclear propelled, is theie already. Deigo Garcia base is there So, against whom are they complaining ? So, wc have to be very very cautious while talking about it.

Bangladesh is only raising certain issues just to embarrass us, just to divert the attention oi its people over there. They do not need much water irom Farakka. But still they are raising all those issues and are trying to internationalise it by bringing in China . China has done very well—I must pay tributes to them—by saying that they were not concerned about it. Bangladesh are trying to bring in Nepal also. They are trying to

[Shri Kapil Verma]

internationalise the issue which is strictly a bilateral issue only to harass us. Our Prime Minister has taken a strong stand. I am told privately that when Mr. Ershad came and when hs met Mr. Gandhi, he told him very frankly not to complicate such matters and not to do any such thing which may distrub our relations.

In Maldives what our army did is certainly praiseworthy.

So, our international relations articularly have been very very good, and on that front our Government has had a very great success. Before closing I will say a few words about the Wage Board issue for journalists. I hope the Wage Board will submit its report quickly and the employees will call off their boycott. Even if they do not call off their boycott, the Board must go on with its work and submit its report by March 31. The Government must ensure that I the report is submitted by this deadline because the journalists are expecting a long-awaited relief while the employe! s are trying to ,. sabotage it. To me it seems they will go to court. So, the Government must adopt a very strict attitude on this issue.

I have been raising the pension issue also from time to time. I am sorry that the Pension Committee has delayed matters. The Labour Minister wrote a letter to me saying that report will be submitted in February, but the other day in reply to my question he said that it will be delayed. I hope the Committee will be asked to expedite it.

With these words I compliment the Governmeat for various successes in the international and domestic fields. Since other friends have already spoken on other fields, I would only say since the Opposition does not have much to say on the international and other subjects, they talk nothing else except their resolve to remove Rajiv Gandhi. They are fighting amongst themselves. They are talking who their Prime Minister will be all the time. They are day-dreaming. They know they are not going to come to power. Since they are fighting amongst themselves, people know the facts and real position and when they are already fighting beiore coming to power what will they do when they come to power. The oeople have the experience of the Janata Government. I am sure our party will come to power after the elections and we will make the motion of thanks for the Presiden t's Address after next year. Thank you.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Hon. Members, we have exhausted the list of speakers for today on the Motion oi thanks on the President's Address. The Minister of State for Science and Technology is here. His business is listed at 6 O' Clock Since he is here we can ask him to again his statement.

STATEMENT BY MINISTER

Recent fire in the semiconductor complex Ltd. Chandigarh

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY AND THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENTS OF OCEAN DEVELOPMENT ATOMIC ENERGY, ELECTRONICS AND SPACE (SHRI K. R. NARAYANAN): It is with a deep sense of regaret I have to inform the hon. Members that on the 7th February, 1989, around 11.40 p. m. a fire was noticed at Semiconductor Complex Limited, SAS Nagar, Punjab, a public sector undertaking under the Department of Electronics engaged in the manufacture of integrated circuit chips and related modules and sub-systems. Steps were immediately taken by the fire fighting staff of Semiconductor Complex Limited and the fire tenders